Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४५
माह- सितम्बर २०१९
अङ्क -०६ (१९९)
वर्ष -१४ (१९)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.com

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

❖ **सम्पादकीय :** **पल्लव**
- चातुर्मास-भावी आशाओं ... : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणमुनि विश्वस्तसागर जी ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- पर्यूषण पर्व का इतिहास...: श्री विरागसागरजी ६
- ३६ नहीं ६३ बनाती है.... :श्री विरागसागर जी १०
- स्वप्न में आये गुरुवर : श्री विरागसागर जी महा. १३
- जिन्होंने १११ समाधि... : श्री सुबलसागर जी १६
- मीठे पानी से कीमती ...: मुनि विश्वस्त सागरजी १७
- कई लोग शार्ट मार्ग से ...: मुनि सुपार्श्वसागरजी १७
- निर्मलता बढ़ती जा...: मुनि विश्वलोचन सागर १८
- विशेषज्ञ बन चुके हैं : आर्यि. विशिष्टश्री माताजी १८
- गुरु के प्रति शिष्यों के...: मुनि विश्वभद्र सागरजी १९
- णमोकार मंत्र का प्रभाव : आर्यि. विप्राश्री माता २१
- रात्रि भोजन जान लेवा : आर्यि.विसंयोजनाश्रीमाता२१
- भव्या को मिला पुन...:आर्यि.विजिज्ञासाश्री माता २२
- प्राणायाम से होने ... : आर्यि. पुनीतचैतन्यमति २३
- विराग में विमल की मूरत : जगतजी जैन २४
- कठिन विषय को भी सरल... : अनीता जैन २४
- घुँघरु बंध जाते हैं : श्रीमती किरण जैन २५
- क्लास से मिली बहुत बड़ी ... : श्रीमती नीतू जैन २५
- धुले हुये साफ वस्त्र पहिनना : संस्कार सुरभि से २५
- आध्यात्मिक शंका-समाधान :श्री विरागसागरजी २६
- शंकाओं का गुरुमुख से आगमिक समाधान २८

❖ **स्वास्थ्य जगत-**
- न्योमोनिया : आर्यि.विवक्षाश्रीमाता जी ३०

❖ **कविताएँ**
- गुरु वंदना : प.पू.गणा. श्री विरागसागर जी १५
- कितने कर्म उदय घिर आये : कांति कुमार जैन १८
- बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओं :आर्यि.वियुक्तश्रीमाता २०
- भावना : आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज २०
- विरागसागर नाम हमें.... : पं. वृजेन्द्र कुमार जैन ३२

❖ **समाचार** ३४

❖ **विराग वर्ग पहेली** ४२

संपादकीय

चातुर्मास-भावी आशाओं के दीप

इंजी. आनन्द कुमार जैन

चातुर्मास धर्म कमाने का मौसम है एवं संत समागम का अध्याय है। वैसे तो चातुर्मास धरा-धरती के असीम पुण्य से होता है और उसमें वे ही व्यक्ति निमित्त बनते हैं जिनका अनेकों भवों का पुण्य सत्ता में रहता है। यूँ तो वर्षायोग की प्रार्थना चातुर्मास से ही प्रारंभ हो जाती है। यह बात विल्कुल सत्य है कि हर किसी को वर्षायोग का अवसर नहीं मिल पाता। जिस नगर ग्राम के श्रावकों का पुराना पुण्य उदय में रहता है उन्हें ही यह अवसर प्राप्त होता है। प्राय: गृहस्थों की ओर से यह प्रश्न किया जाता है कि हमें षट्खण्डागम का स्वाध्याय करना चाहिये अथवा नहीं क्योंकि चातुर्मास में सभी स्वाध्याय करना चाहते हैं। इसका समाधान भी एक ही है कि जब लक्ष्य सभी का ग्रहस्थ व श्रमण का एक ही है अर्थात् मुक्ति को प्राप्त करना और मुक्ति बिना आगम के स्वाध्याय के सम्भव नहीं है। यह बात अलग है कि वह मुक्ति किसके पास रह गई है और किससे दूर है परन्तु दूर वाले के लिये भी जब तक लक्ष्य सामने नहीं रहेगा तब तक लक्ष्य की दूरी तय नहीं हो सकती। इसलिये गृहस्थों के लिये भी षट्खण्डागम का स्वाध्याय करना आवश्यक है। परन्तु २०वीं शताब्दी में जैन सिद्धान्त मुरैना के प्रधान अध्यापक पण्डित स्व. मक्खन लाल जी शास्त्री ने सिद्धान्तशास्त्र और उनके अध्ययन का अधिकार नामक एक पुस्तक लिखी थी, जिसमें उन्होंने यह बतलाने का प्रयत्न किया था कि गृहस्थों को सिद्धान्त ग्रन्थों को पढ़ने का अधिकार नहीं है। इसलिये इन ग्रन्थों को पढ़ना पढ़ाना और प्रकाशित करना बन्द कर देना चाहिये। यह भी नहीं इसके आधार पर मत संग्रह के द्वारा यह भी प्रयत्न किये गये कि षट्खण्डागम, कषाय पाहुड़, धवल जयधवल आदि का स्वाध्याय नहीं किया जाना चाहिये। एतदर्थ जो प्राचीन आचार्यों के इसके समर्थन में प्रमाण उपस्थित किये गये वे सामान्य जन के मन में भ्रम उत्पन्न करते हैं। इसलिये यह आवश्यक समझा गया कि प्राचीन आचार्यों के उन तथ्यों का सम्यक् परीक्षण किया जावे, जिससे तथ्य बुद्धि जीवियों के समक्ष आ सके। गहन चिन्तन के उपरांत ये तथ्य सामने आये कि लेखक द्वारा तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया है जबकि सत्य यह है कि किसी भी आचार्यों ने सिद्धान्त ग्रन्थों को गृहस्थों के लिये पढ़ने से मना नहीं किया गया है।

परमपूज्य १०८ गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने बताया कि चातुर्मास धर्म प्रभावना का संप्रयोग है एवं साधना शैली का मंत्र है, चातुर्मास सदोपयोग की बेला है एवं ज्ञानी जनों का मेला है। चातुर्मास सिद्ध बनने का एक तरीका है एवं मुक्ति पाने का सच्चा मार्ग है। बन्धुओ जब हम चातुर्मास शब्द को देखते हैं तो चार अक्षर से बना है इसलिये यह चार महीने का योग है। यूँ तो साधु संतकि निरंतर पानी की तरह बहते रहते हैं उनके एक जगह स्थिर रुकने का समय केवल चातुर्मास है। प्राचीन समय में वर्षायोग होता था। बड़े-बड़े त्यागी-तपस्वी जन चार माह तक एक स्थान पर योग धारण करते थे अर्थात् स्थिर एक आसन में चार माह तक खड़े रहते थे फिर न गमनागमन करते थे। आहार आदि के लिये उठते थे उसे कहते थे वर्षायोग। आज के समय में वर्षायोग नहीं वर्षावास होता है अर्थात् जीव रक्षा के लिये साधुजन विहार नहीं करते एक निश्चित स्थान पर ही चार माह त्याग तपस्या और धर्ममय व्यतीत करते है।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार २०.११.१९८२)

।। णमो लोए सव्वसाहूणं।।

हे आत्मन्! संसारी भव्य प्राणी रागद्वेष के कारण संसारार्णव में जामन मरण के महान दु:खों का वाहन करता फिरता है। उस जामन मरण के दु:ख दूर करने को श्री १००८ श्री जिनेन्द्र भगवान महावीर स्वामी की देशना में भव्यों को बतलाया हैं कि स्वाध्याय करो और आर्तध्यान, रौद्रध्यान में से छुटकारा पाने के लिए सिद्ध परमात्मा की भक्ति ही कार्यकारी है वह भक्ति पूर्णता धर्मध्यान मनन चिन्तन द्वारा रागद्वेष को भगाना पड़ेगा और भावना जाग्रत रूप संवेग को प्राप्त होगी। अत: वैराग्य भावना जाग्रत करने के लिए व्रत, संयम धारण करो और व्रत संयम से विशेष कर धर्म ध्यान वृद्धि होगा और भक्ति आदि से कर्मों का भी यथा क्रम से नष्ट हो जावेगा। अत: हे विमलात्मन तुम रागद्वेष के बिना भावना धार्मिक बनाना ही श्रेअो मार्ग है। धर्म ध्यान ही ध्यान है। अर्त ध्यान छोडकर धर्म ध्यान की सिद्धि ही कार्यकारी है। अत: स्वध्याय परम तप कहलाता है। अत: स्वाध्याय ही ध्यान का कारण है परमात्मा की सिद्धि कराने में सहायक है और परमात्मा बनने के परमात्मा का ध्यान करो।

जिनोपदेश

संकलन- समाधिस्थ मुनि विश्वस्त सागर जी महाराज की डायरी से संकलित

बन्धो बन्धो च बन्धो हि, बन्धुता चेदवञ्चिता। क्ष.चू. ८/२६।।

अर्थ- यदि निष्कपट बंधुपना होते तो संबंधी क संबंधी में प्रेम हो जाता है।

पातापायान्न चेत्पायात्, कुतो लोक व्यवस्थिति:।। क्ष.चू. ८/२८।।

अर्थ- यदि राजा अध:पतन से होने वाले विनाश से रक्षा नहीं करे तो संसार की स्थिति कैसे रह सकती है।

अनापायादुपायाद्धि, वाञ्छितापि-र्मनीषिणाम्।। क्ष.चू. ९/७।।

अर्थ- बुद्धिमानों के इच्छित वस्तु की प्राप्ति प्रतिबन्धरहित उपाय से होती है।

अनवद्या सती विद्या, फलमूकापि किम्भवेत्।। क्ष.चू. ९/९।।

अर्थ- निर्दोष समीचीन विद्या भी क्या कलरहित होती है? किंतु नहीं होती।

विशेषज्ञा हि बुध्यन्ते, सदसन्तौ कुतश्चन।। क्ष.चू. ९/२४।।

अर्थ- बुद्धिमान किसी न किसी कारण से निपुण और मूर्ख का निश्चय कर लेते है।

विधित्सिते ह्यनुत्पन्ने, विरमन्ति न पण्डिता:।। क्ष.चू. १०/६।।

अर्थ- बुद्धिमान अपने इच्छित कार्य के पूर्ण न होने तक कभी विश्राम नहीं लेते।

न ह्यमन्त्रं विनिश्चेयं, निश्चेते च न मन्त्रणम्।। क्ष.चू. १०/१०।।

अर्थ- विचार किये बिना कोई भी निश्चित नहीं करना चाहिए तथा निश्चित हो जाने पर सलाह भी नहीं करना चाहिए।

ज्ञात्वा हि हृदयं शत्रो: प्रारब्ध्त्या प्रतिक्रिया।। क्ष.चू. १०/११

अर्थ- शत्रु के विचार को जानकर ही प्रतिकार प्रारम्भ करना चाहिए।

कृतिनामेकरूपा हि, वृत्ति सम्पदसम्पदो:।
न हि नादेयतोयेन, तोय धेरस्ति विक्रिया।। क्ष.चू. ११/३।।

अर्थ- निश्चय से बुद्धिमानों की प्रवृत्ति सम्पत्ति और विपत्ति में सदृश होती है क्योंकि नदी के जल से समुद्र के उल्लंघन करने रूप विकार नहीं होता।

कालातिपात मात्रेण, कर्त्तव्य हि विनश्यति।। क्ष.चू. ११/७।।

अर्थ- कार्योचित समय के निकल जाने से करने योग्य कार्य बिगड़ जाता है।

पर्यूषण पर्व का इतिहास व महत्व

प्रवचनकार -परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज

बन्धुओ! आज हम सभी पर्यूषण पर्व की पावन बेला के शुभारंभ को बड़े उत्साह के साथ मना रहे हैं। प्राय: यह प्रश्न सभी लोगों के मन में होगा कि पर्यूषण पर्व भाद्र शुक्ला पंचमी से ही प्रारंभ क्यों होता हैं तो इसके विषय में दिगम्बर जैन संप्रदाय में जो वर्णन मिला है वह अन्यत्र कहीं भी नहीं मिला। हमारे शास्त्रों में इसके इतिहास को बतलाते हुए कहा है कि जिस प्रकार अवसर्पिणी के बाद उत्सर्पिणी काल आता है इसी का नाम एक कल्पकाल कहा जाता है एक कल्पकाल बीत जाने के बाद दूसरा कल्पकाल प्रारंभ होता है ऐसा ही क्रम अनादि अनिधन रूप में चलता रहता है। जैनाचार्यों ने इसके विषय में बतलाया है कि जब कल्पकाल का शुभारंभ होता है जिसे आज की भाषा में युगारंभ कहते हैं वह युगारंभ श्रावण वदी एकम से प्रारंभ होता है और यदि पूर्व काल का अवशान देखें तो एकम से ४५ दिन पूर्व अर्थात् ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी को काल का अंत होता है। उस समय ४९ दिन तक कुवृष्टि प्रारंभ होती है। ७ प्रकार की कुवृष्टियाँ सात-सात दिन तक अनवरत होती है कुल मिलकार ४९ दिन तक यह कुवृष्टि चलती है इसके बाद सारा संसार शून्यशान वीरान रेगिस्तान की तरह हो जाता है उस समय न कोई मनुष्य और न कोई पशु-पक्षी ही नजर आते हैं न कोई घर न मंदिर सब कुछ कुवृष्टि से ध्वस्त हो जाता है सारे प्राणी पाप की बहुलता से कुवृष्टि में मरण को प्राप्त हो जाते हैं मात्र इन्द्र और विद्याधर मनुष्यों एवं पशु-पक्षियों के कुछ जोड़ों को गंगा-सिंधु नदी के तट पर एवं विजयार्द्ध पर्वत के नीचे छिपा देते हैं मात्र उतने ही जोड़े सुरक्षित रहते हैं।

कुवृष्टि के पश्चात् जब ४९दिन तक सुवृष्टि होती है तो उससे वीरान पृथ्वी पुन: हरी भरी होने लगती है वृक्ष-पौधे घास अंकुरित होती है धीरे-धीरे वह मिष्ठ व औषध रस रूप में परिणत होती है नदी, सरोवर स्वच्छ जल से परिपूर्ण हो जाते हैं जिसे देख विजयार्द्ध पर्वत की तलहटी तथा गंगा-सिन्धु के किनारे छिपे हुए वे मनुष्य आदि प्राणी धीरे-धीरे बाहर निकलते हैं और मिष्ठ फल एवं स्वच्छ अमृत तुल्य जल को पीकर अपना जीवन यापन करने लगते हैं। यह सुवृष्टि श्रावण कृष्णा एकम से भाद्र शुक्ला चौथ तक होती है और पंचमी के दिन सौधर्म इन्द्र उन सभी प्राणियों को बाहर धरती पर लाते है। और इसी खुशी में १० दिन तक अध्यात्मिक धर्म का अनुष्ठान करते हैं। यही १० दिन आम जगत में पर्यूषण (दसलक्षण धर्म) के रूप में प्रसिद्ध होते हैं। ये दस धर्म किसी जाति, संप्रदाये और दर्शन विशेष के धर्म नहीं है अपितु आत्मा के ही दस स्वभाव हैं इसीलिए यह धर्म संज्ञा को प्राप्त हुए हैं। जब ये धर्म आत्मा में धारण किये जाते हैं तो इनके माध्यम से कर्म कालिमा धुलने लगती है। जब हम इसकी व्युत्पत्ति देखते हैं तो कहा जाता है 'परि समन्तात उष्णातीति पर्यूषण' जो चारों तरफ से प्राणी को ऊष्णता की भूमिका में ले जाये उसका नाम है पर्यूषण पर्व।

आप लोगों को सुनकर आश्चर्य हो रहा होगा कि ऊष्णता की ओर, हाँ, पर्यूषण पर्व प्राणी को ऊष्णता की ओर ले जाता है। ऊष्णता का दूसरा अर्थ है तप, तप से ही तपन शब्द बना है। तपन कहो, तप कहो, ऊष्णता कहो सभी का नाम एक है।

दुनियाँ के जितने भी पर्व आते हैं प्राय: सभी पर्व नये कपड़े पहनने की बात करते हैं साज-सज्जा की बात करते हैं, नये-नये पकवान बनाने की बात करते हैं खाने-पीने और घूमने की बात करते हैं मनोरंजन की बात करते हैं लेकिन जैनधर्म का पर्यूषण पर्व इससे बिल्कुल विपरीत बात करता है। ये खाने-पीने के नहीं खाना त्यागने के दिन हैं। भोजन त्यागने के दिन है। यही कारण है कि इस दिनों में अनेक स्थानों में लोग व्रत-नियम-संयम का पालन कर रहे हैं। कोई १ माह का उपवास करता है। अपने संघ में भी महाराज, माताजी की ऐसी साधना चल रही है। कोई १६ कारण के १६ उपवास करते हैं उनकी भी अपने यहाँ साधना चल रही है। कोई १० दिन के १० उपवास भी करते हैं रत्नत्रय के ३ उपवास भी कई लोग करते हैं अपने यहाँ इन सभी उपवासों की साधना के साथ बेला, तेला एवं एकान्तर वाले भी काफी महाराज, माता जी लोग हैं।

बन्धुओ! यही साधना प्राणी को तप की भूमिका में ले जाती है। तप शब्द से तपन बना है और तपन का अर्थ सूर्य भी होता है। कोश में सूर्य के दिनकर, तपकर, भानु, प्रकाशपुंज, आदि उनमें एक तपन नाम भी आता है। जो ऊष्णता उत्पन्न करता है। विशेषता इतनी है विज्ञान भले ही सूर्य के लिए आग का गोला कहता हो लेकिन जैनधर्म में सूर्य आग का गोला नहीं है अपितु सूर्य विमान में आतप नामकर्म का उदय पाया जाता है आतप का तात्पर्य है जो मूल में शीतल हो और किरणों से ऊष्ण हो। सूर्य की यह विशेषता है जितनी दूर तक उसकी किरणें जाती है उतनी-उतनी गर्मी अधिक बढ़ती जाती है गर्मी के दिनों में सूर्य सुमेरु पर्वत की अंतिम वलय (गलियों) की ओर होता है जो जम्बूद्वीप से काफी दूर हो जाता है इसलिए गर्मी अधिक हो जाती है और जब सूर्य पास की गलियों में आ जाता है तो ठण्डी का मौसम आ जाता है लोगों को सर्दी लगने लगती है ऐसा सूर्य विमान है।

ठीक इसी प्रकार जिनके शरीर में तो तप होता है लेकिनक परिणामों में विशुद्धि होती है निर्मलता होती है इसी का नाम है तप।

पर्यूषण पर्व में साधक जन तप करते हैं वह भी भाद्रमाह के पर्यूषण पर्व में अधिक करते हैं। मल्लिनाथ पुराण में भाद्रमाह के विषय में कहा है-

अहोभाद्र पदाख्योहं सामानेकव्रताकरं।
धर्महेतु मध्येन्य, मासानाम नरेन्द्रवत्।।

यहाँ अहो! शब्द आश्चर्य का प्रतीक है कि यह भाद्र माह का एक ऐसा महीना है जिसमें अनेक व्रत होते हैं यूँ कहें संपूर्ण भाद्रमाह व्रतों से समन्वित है। भाद्र कृष्णा एकम से ही सोलह कारण व्रत प्रारंभ हो जाता है। भाद्र शुक्ला तीज को रोटतीज, चौथ को सासन चौथ, पंचमी से तो पर्यूषण प्रारंभ हो जाता है पंचमेरु प्रारंभ हो जाते हैं उसके बाद अनंतव्रत, रत्नत्रयव्रत, सुगंधदशमी व्रत, अनंतचतुदर्शी व्रत आदि अनेक व्रत भाद्रमाह में चलते हैं जितने की किसी भी महीने में नहीं है इसलिए इस माह को सबसे अधिक धार्मिक माह कहते हैं। यूँ तो हर संप्रदायें में एक-एक माह धर्म, व्रतों के होते है लेकिन सबसे अधिक धर्म साधना भाद्रमाह में होती है इसका कारण यह भी है इस माह में शादियाँ नहीं होती, किसी का भी व्यापार अधिक नहीं चल पाता घर गृहस्थी के भी ज्यादा काम नहीं रहते हैं इसलिए सभी फ्री रहते हैं। दूसरी बात पानी आदि बरसने से मौसम भी अनुकूल रहता है। साधु संतों का भी विहार नहीं होता वे चार माह तक स्थाई हो जाते हैं इसलिए श्रावक एवं साधु सभी इस माह में सर्वाधिक धर्म साधना करते हैं। अत: मल्लिनाथ पुराण में इस माह को महीनों का राजा कहा गया है, सभी महीनों में भाद्रमाह श्रेष्ठ नरेन्द्र (राजा) की भांति है।

पर्यूषण पर्व को अध्यात्मिक पर्व कहा गया है इन दिनों में आत्मा के दस धर्म (स्वभावों) की आराधना की जाती है इन्हें ही दस धर्म कहते हैं उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य, उत्तम ब्रह्मचर्य।

ये १० प्रकार के धर्म पाप कर्म के नाशक है प्राय: कर जैन लोग अन्य दिनों मंदिर आदि जाते हों या न जाते हों इन दस दिनों तो सभी मंदिर जाते हैं पूजन करते हैं कोई न कोई व्रत नियम, संयम का पालन करते है। वचनिका (स्वाध्याय) अथवा प्रवचन सुनते हैं धूम-धाम से भगवान की आरती करते हैं लगभग सभी अपने-अपने हिसाब से धर्माचरण करते हैं।

बन्धुओ! ये दस धर्म अंतर आत्मा में लगे पापों को धोने के प्रबल हेतु हैं इसलिए कहा जाता है अपने लिये पर्यूषण पर्व जरूर मनाना चाहिए। साल भर की गंदगी जरूर धो लेना चाहिए और यदि एक वर्ष में भी न धो पाये तब तो फिर कोई भरोसा नहीं है कि पुन: आपको अवसर मिल सके या न मिले। दूसरी बात कही जा रही है कि अच्छे कार्य करने से पुण्य तो होता है उसे कोई नहीं रोक सकता लेकिन पुण्य के लिए धर्म नहीं करना चाहिए। पुण्य के लिए धर्म करना केवल व्यापार की तरह है। जैसे एक व्यापारी पैसे कमाने के लिए व्यापार करता है व्यापार करना तो नहीं चाहता लेकिन पैसे चाहिए

इसलिए करना पड़ रहा है वैसे ही जो व्यक्तिकि पुण्य के लिए लौकिक प्रयोजन को लेकर धर्म करता है उसका वह धर्म वास्वविक लक्ष्य को प्रदान नहीं कर सकता वह भी व्यापार की तरह ही रहता है जबकि धर्म साध्य है और उससे मिलने वाली सामग्री सब साधन है। संतजन ज्ञानीजन साध्य की सिद्धि के लिए ही उपासना करते हैं व्रत, नियम, संयम का पालन करते हैं इसलिए हमारी दृष्टि में साध्य होना चाहिए।

एक बार किसी व्यक्ति ने पूछा- हे गुरुवर! आप सामायिक क्यों करते हो मैंने कहा- कर्मों के क्षय के लिए, स्वाध्याय क्यों करते हो, कर्मो के क्षय के लिये, प्रतिक्रमण, ध्यान क्यों करते हैं तो वह भी मैंने कहा कर्मो के क्षय के लिए। जितनी भी निदंदिनी क्रियायें हैं वे सभी क्यों करते हैं पुण्य की प्राप्ति के लिए नहीं अपितु कर्मों के क्षय के लिये करते हैं। आप सभी पूजा करते हो, श्रावक साधना शिविर में बैठकर दिन भर तपस्या करते हो आखिर क्यों? केवल कर्मों के क्षय का लक्ष्य है अन्य कोई प्रयोजन नहीं है न यहाँ आपको कुछ मिल रहा है न कोई तंत्र-मंत्र की सिद्धि हो रही है न कोई लक्ष्मी और सरस्वती ही प्रसन्न हो रही है। ऐसा कुछ भी नहीं है एक मात्र दुक्कखओ, ...जिनगुण संपत्ति होदु मज्झम अब तो आरामक से सभी की समझ में आ गया कि हम पूजा क्यों करते हैं। टीटू भैया! खूब गुलाब जामुन मिलेंगे इसलिए तो नहीं आये हो, नहीं-नहीं गुलाब जामुन तो खूब खाये हैं यहाँ तो साधना के लिए आये हैं। हमारे विनोद पण्डित जी कह रहे थे साधना के संस्कार तो साधना होगी और संस्कार भी मिलेंगे। कितनी बड़ी साधना के लिए आप सभी तत्पर हो गये। घर में १० बार भोजन पानी, ए.सी., कूलर की सारी सुविधाएँ छोड़कर एक टाईम खाना और चटाई पर सोना आप सभी ने स्वीकार कर लिया। रोज टी.वी. देखने वालों ने पूरी तरह से टी.वी. छोड़ दी। यहाँ तो सभी के मोबाइल भी जमा हो गये हैं और किसी के पास रह भी गये होंगे तो उन्हें अवसर समय ही नहीं मिल पाता मोबाइल चलाने का। टाईम टेवल इतना विजी है कि एक क्लास के बाद दूसरी-दूसरी के बाद तीसरी सारे कार्यक्रम जुड़े हुए हैं इसे यदि हम अखण्ड साधना भी कह दे तो भी कोई अतियोक्ति नहीं है।

१. बन्धुओ! इस पर्यूषण पर्व को हम सभी मना रहे हैं इसमें सर्वप्रथम उत्तम क्षमा का दिन है क्षमा के साथ उत्तम विशेषण जुड़ा हुआ है। इसका अर्थ है यहाँ केवल रूढ़ी क्रिया नहीं ज्ञान परख क्रिया है अंतर आत्मा से उत्पन्न होने वाली क्षमा है। यूँ तो क्षमा दुनियाँ के अनेक धर्मों में प्राप्त हो जाती है लेकिन उत्तम क्षमा केवल जैनधर्म में देखने को मिलती है। लोग कहते हैं क्षमा वीरस्य भूषणं लेकिन मैं कहता हूँ उत्तम क्षमा वीरस्य भूषणं है। क्रोध को भड़काने वाली साधना सामग्री के उपस्थित होने पर भी जो क्रोध न करे वह उत्तम क्षमा है।

२. मार्दव का अर्थ है नम्रता, नम्रता दूसरों को अपना बनाने का सबसे बड़ा गुण है नम्रतावान से दुनियाँ जुड जाती है लोग उससे बात करने, उसके पास बैठने को तरसतेक हैं। नम्र व्यक्ति को दुनियाँ में जो ऊँचाईयाँ मिलती है वह अन्य को नहीं मिल पाती हैं। हमारे आचार्यों ने विनय को मोक्ष का द्वार बतलाया है अर्थात् विनयवान के लिए मोक्ष भी सहजता में थोड़े से ही पुरुषार्थ में प्राप्त हो जाती है। इसलिए अभिमान के कारण उपस्थित होने पर भी मान नहीं करना चाहिए वही वास्तविक उत्तम मार्दव धर्म कहलाता है।

३. आर्जव धर्म जीवन में सरलता लेकर आता है। आर्जव धर्म को पाने के लिए मन, वचन, काय की कुटिलता का निर्सन करना होगा। हम जो भी अच्छे धार्मिक कार्य करें तीनों योग पूर्वक करें कहीं हमारी दिखाने की क्रिया कुछ अन्य और वास्तविक क्रिया अन्य न हो जाये अन्यथा वह धर्म के नाम पर छल हो जायेगा। हम गुरु कुली हैं तो हमारी संपूर्ण क्रिया गुरु आज्ञा आदेशानुसार यथावत् व्यवस्थित होना चाहिए अन्यथा आप गुरु और धर्म के साथ बहुत बड़ा छल, कपट कर रहे हैं जिसका फल कालान्तर में दुख दायी प्राप्त होगा। अत: हम इन कुटिल भावों को छोड़ सहज, सरल बनें तभी आर्जवधर्म प्रवेश कर सकता है।

४. मैंने बहुत कौशिश की उत्तम शौच को खोजने की किसी में तो शौचधर्म मिले लेकिन दुनियाँ में किसी प्राणी के

अंदर उत्तम शौचधर्म नहीं मिला हाँ अंत में मुझे दिखे तो एकमात्र मुनिराज ही दिखे जिनके अंदर उत्तम शौचधर्म पाया जाता है। आम जगत शौच का अर्थ गंदगी लेत है, कहीं गंदगी पड़ी होती है लोग कहने लगते हैं शौच पड़ी है यह बिल्कुल गलत है क्योंकि शौच का अर्थ पवित्रता है और वह पवित्रता लोभ के त्याग से आती है। जिनके जीवन में जितना लोभ घटता जायेगा पवित्रता उतनी अधिक बढ़ती जायेगी। अत: हम लोभ का त्याग कर शौचधर्म को अपनायें।

५. सत्य आकाश की तरह अंनत, असीम, अथाह होता है। सत्य को वचनों ने नहीं कहा जाता है। सत्य के विषय में वचन मौन हो जाते हैं। सत्य आत्मा का स्वभाव है उसके वर्णन में शब्द बौने हैं। सत्य उस खुशी उस आनंद की तरह है जो शब्दातीत होती है। सत्य वचन मात्र सत्य को समझने का माध्यम है। सत्यव्रत सत्य तक पहुँचने की सीढ़ियाँ हैं। अधिक बोलना असत्य के लिए आमंत्रण देना हैं।

६. संयम वह निधि है जिसकी रक्षा प्राण देकर भी करना होती है। संयम खेल-कूद की वस्तु नहीं वीरों का आभूषण है। संसार, शरीर, भोगों से विरक्ति का नाम है संयम। वैराग्य नहीं है तो संसार की छोटी सी वस्तु भी संयम में बाधा उत्पन्न कर देती है किन्तु प्रबल वैरागी को संसार की कोई भी शक्ति रोकने में समर्थ नहीं होती है। संयमी साधक दीक्षा लेते ही अपनी मौत को हथेली पर लेकर चलते हैं।

७. तपन से तप शब्द बना है, तपस्वी जन बाहर से तो तपते है लेकिन अंतरंग आत्मा से शीतल रहते हैं। जिस प्रकार तपाये बिना स्वर्ण शुद्ध नहीं होता उसी प्रकार तप के बिना कर्मरूपी कालिमा दूर नहीं होती है। तप कर्मों से हल्के होने का सबसे बड़ा माध्यम है। बिना तप के जीवन में निखार नहीं आता, अत: तप मोक्ष के लिए परमावश्यक है।

८. व्यक्ति को ऊपर उठाने वाला त्याग होता है। त्याग दो प्रकार से किया जाता है छोड़ना और देना, छोड़ी तो कोई भी वस्तु जा सकती है लेकिन देने में उचित वस्तु ही दी जाती है। आ व्यक्ति को दी गई वस्तु और सत्पात्र को दी गई वस्तु में बहुत बड़ा अंतर है। आम व्यक्ति को दी जाने वाली औषधि पुस्तक, भोजन अथवा रहने के लिए स्थान सभी करूणा दान के अंतरगत आती हैं लेकिन जो वस्तु सत्पात्र को दी जाती है वह चार प्रकार के दान में गर्भित होती है और वहीं इस भव में यश: कीर्ति व परभव में सुखों को प्रदान करने वाला त्याग धर्म है मुनिजन सब कुछ त्याग कर उत्तम त्याग धर्म को अंगीकार करते है।

९. अंतरंग और बहिरंग समस्त परिग्रह का त्याग करना तथा अंतरंग से मूर्छा भाव का पूर्णरूपेण त्याग करने वाले यतिराज उत्तम आकिंचन्य धर्म से समन्वित होते हैं। संसार में मेरा कोई नहीं है न मैं किसी का हूँ इस प्रकार की भावना आकिंचन्यधर्म को उत्पन्न करती है।

१०. गृहस्थावस्था में रहने वाले श्रावक अपनी स्त्री के अलावा समस्त स्त्रियों को माता, बहिन, पुत्री के समान मानते हैं यह उनका ब्रह्मचर्यव्रत है अथवा उनके व्रत को स्वदार संतोष व्रत भी कहते हैं। इससे और ऊपर उठी हुई ब्रह्मचर्य महाव्रत की भूमिका होती है इसमें मुनिजन स्त्री मात्र के त्यागीर होते हैं समस्त स्त्री जाति को वे माँ बहिन, बेटी ही मानते हैं। नौ कोटि से पूर्ण ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करने वाले उन मुनिराजों को उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत होता है।

इस प्रकार इन दस धर्मों का समागम लेकर पर्यूषण पर्व हमारे बीच आया है। हम इन दिनों में यथा शक्ति त्याग तपस्या, व्रत-नियमों का पालन कर अपने जीवन को धर्ममय बनायें। ये दश आत्मधर्म प्रत्येक प्राणी के जीवन में मंगल प्रदान करें सुख-शांति की वृद्धि करें। देश, राष्ट्र और समाज की उन्नति करें सभी भक्तों को परम्परा से मोक्ष प्रदान करें ऐसी मंगल भावना के साथ...

।। जय बोलिए महावीर भगवान की जय।।

३६ नहीं ६३ बनाती है क्षमावाणी

प्रवचन- परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज

लोकोत्तमो हवे मैत्ति सव्वस्सकारगं।
मैत्तिविणा कुदो हस्सं हस्सो मेत्ति विणा कुदो।।

यहाँ कहा गया है कि मैत्रीभाव लोक में सर्वोत्तम है। मैत्री सभी में हर्ष उत्पन्न करने वाला है। मैत्री के बिना खुशी कहाँ और खुशी के बिना मैत्री कहाँ हो सकती है।

बैरं छत्तीस समो, मैत्री तेसट्ठ खमो उत्तो।
हेओ खलु छत्तीसो, उवादेयो सया तेसट्ठी।।

यहाँ कहा गया है बैर छत्तीस के अंक को उत्पन्न करता है जब किसी से बैर होता है तो व्यक्ति छत्तीस बन जाता है। छत्तीस में दो अंक है ३, ६ बैर बाले छत्तीस की तरह रहते हैं एक उस ओर मुख करेगा दूसरा दूसरी ओर करेगा पीढ देकर बैठेगा ठीक ३६ की तरह एक दूसरे के विपरीत होकर बैठते हैं यह बैर का प्रतीक है छत्तीस होना अपने यहाँ अच्छा नहीं माना गया। दूसरी बात कही गई है, मैत्रीभाव दोनों के मुख आमने सामने करके ६३ की स्थिति बना देता है। यद्यपि ६३ में भी ६ और ३ के अंक है और ३६ में भी ३ और ६ के अंक है लेकिन दोनों में अंतर यह है कि छत्तीस में परस्पर पीठ दिये हुए हैं और ६३ में दोनों के मुख सन्मुख हैं।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि सभी मुझे ६३ के रूप में नजर आये कोई भी ३६ नजर न आये क्योंकि क्षमावाणी में ३६ नहीं ६३ होने का महत्व है ६३ होना ही क्षमावाणी कहा जाता है जहाँ व्यक्ति परस्पर के बैर विरोध द्वेष ईर्ष्या छोड़कर सन्मुख बैठ जाये गले से गले मिल जाये वहीं से क्षमावाणी का प्रादुर्भाव होता है।

क्षमा हमारे मन में वचन में और काय में भी होना चाहिए जब हमारे तीनोयोग क्षमारूप होते है तो एक ऐसी रसायनिक प्रक्रिया उत्पन्न होती है जो सभी प्राणियों में आनंद और खुशी उत्पन्न कर देती है। मैत्री में आनंद खुशी भरी होती है। एक दूसरे के लिए सहयोग के भाव होते हैं।

आप अपने गले में सोने की चैन पहिनते हैं उसमें छोटी-छोटी कड़िया होती है यद्यपि उसकी एक कड़ी का खाश महत्व नहीं है लेकिन जब वे ही कड़ी एक दूसरी कड़ी से परस्पर मिल जाती है तो वह इतना बड़ा रूप ले लेती है कि उसे आप अपने गले में धारण कर लेते हैं।

बन्धुओ! जिस समय रामचंद्र जी वनवास की ओर गये थे उस समय राम, लक्ष्मण और सीता मात्र तीन ही व्यक्ति थे लेकिन जब लौटकर आये तो अक्षोहिणी प्रमाण सेना के साथ लौटे। किसी ने उनसे पूछा कि आपने ऐसा कौन सा मंत्र जपा है? कौन सी विद्या या आकर्षण, वशीकरण मंत्र सिद्ध किया है? राम ने कहा- मैंने एक भी कोई ऐसी विद्या सिद्ध नहीं की। हम ही सबके साथ होते गये तो आज सभी हमारे साथ हो गये।

क्षमा एक ऐसा सूत्र है जो प्राणी के अन्दर लघुता उत्पन्न कर देता है। अधिकांशत: व्यक्तियों के अंदर ये धारणा रहती है कि गल्ति हो गई अब कौन पहले क्षमा मांगे, व्यक्ति एक दूसरे के सामने हाथ बांधकर खड़ा होता है। उनकी सोच रहती है सामने वाला पहले क्षमा मांगे और दूसरा इस इंतजारी में रहता है वो पहले क्षमा मांगे और जब तक ये दोनों ऐसा सोचते है तब तक क्षमा नहीं आ सकती। क्षमावान के हृदय में तो पहले ही नम्रता आ जाती है। उसकी धारणा रहती है मैं पहले क्षमा मांगू। अगर दोनों में से कोई यह कहना प्रारंभ कर दे कि आप पहले क्षमा मांगियें आप झुकिये तो शायद एक भी नहीं झुकेगा लेकिन जहाँ पर पहले मैं क्षमा मांगूगा ऐसी प्रक्रिया प्रारंभ हो जायेगी वहाँ पर दोनों क्षमा मांगने के लिए दौड़ पड़ेंगे। और यह कहना प्रारंभ हो जायेगा आप रूको मैं पहले क्षमा मांगूगा।

अपनी गल्ति का अहसास होना और उसके धोने का उपाय करना इससे बढ़कर और कोई क्षमा नहीं हो सकती। राजा श्रेणिक ने यशोधर मुनिराज के गले में मरा हुआ सर्प डाल दिया और इस इंतजारी में वहाँ बैठ गया कि ये सर्प को दूर

करें तो मैं तलवार से इनका मस्तक अलग करूँ लेकिन मुनिराज तो ध्यान से विचलित भी नहीं हुए सर्प हटाना तो दूर उन्होंने अपनी आंखे भी नहीं खोली तीसरे दिन राजा श्रेणिक ने महारानी चेलना को मुनिराज के ऊपर सर्प डालने की बात कही तो उसी क्षण चेलना महाराजा श्रेणिक को लेकर वन में पहुँची और उपसर्ग दूर किया। उपसर्ग दूर होते ही महाराज का ध्यान विसर्जन हुआ। उस समय महाराजा श्रेणिक पश्चाताप की ज्वाला में अपने उपार्जित कर्म जला रहे थे। वे सोच रहे थे कि मुझे क्या मालूम था दिगम्बर संत इतने महान साधक होते हैं। मैंने तो यही सोचा था कि ये संत भी आम संतों की तरह सांप को निकाल कर भाग जायेंगे लेकिन ये तो तीन दिन तक वैसे ही ध्यानस्थ विराजमान हैं हिले भी नहीं, ओहो! निश्चित ही इन पर उपसर्ग करके मैंने बहुत बड़ा पाप उपार्जन किया है अब इस पाप को मैं कैसे दूर करूँ।

ध्यान विसर्जन होते ही महारानी चेलना ने यशोधर मुनिराज को नमोस्तु किया। महाराज ने उसे धर्म वृद्धि रस्तु कहकर आशीर्वाद दिया तो पास में बैठे श्रेणिक ने भी श्रद्धा से सिर झुकाकर नमस्कार किया। महाराज ने उन्हें भी वैसा ही प्रसन्नता के साथ आशीर्वाद दिया। यह देख श्रेणिक और अधिक प्रभावित हो गये। वे सोचने लगे उपसर्ग दूर कर्ता को तो सभी आशीर्वाद देते हैं लेकिन इन संत की महानता तो देखो उपसर्ग करने वाले को भी ये वैसा ही आशीर्वाद दे रहे हैं। सचमुच ऐसे संत पर उपसर्ग कर मैंने महान पाप किया है। इस पाप के प्राश्चित में, मैं अपना सिर काटकर इनके चरणों में रख दूँ तो भी कम है ऐसा सोचते ही उसने अपने म्यान से तलवार निकाल ली तभी उसे रोकते हुए मुनिराज बोले- राजन् ठहरिये, पाप का प्रायश्चित सिर काटने से नहीं पाप के पश्चाताप से होता है जो कि तुमने कर लिया। अब मुझे विश्वास है कि भविष्य में आप ऐसी गल्ति कभी नहीं करोगे।

बन्धुओ! यदि हमारे अंदर ऐसी पवित्र भावना आ जाये तो इससे बढ़कर और क्या क्षमा हो सकता है।

एक बार विहार के दौरान हमारा विश्राम किसी हिन्दू मंदिर में हुआ। तो वहाँ की ग्रामीण जनता श्रद्धालु थी वह जिस प्रकार अपने देवता के लिए नमस्कार कर रही थी उसी तरह हमारे लिए भी नमस्कार कर रही थी। मैंने उनके नमस्कार करने की पद्धति को देखा कि नमस्कार करने के बाद वे अपने दोनों कान पकड़ रहे थे। एक दो नहीं वहाँ जितने लोग भी नमस्कार करने आ रहे थे प्राय: सभी ऐसी ही पद्धति को अपना रहे थे। तो उन्हीं में से एक सज्जन को पास बुलाकर मैंने पूछा- आप लोग कान क्यों पकड़ रहे हैं तो उन्होंने कहा- हम लोग संसारी हैं अनेक प्रकार की गल्तियाँ हमसे होती हैं परमात्मा के समक्ष उन सभी गल्तियों को हम स्वीकार करते हैं और कान पकड़कर उनकी क्षमा मांगते हैं। प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! हमें ऐसी शक्ति दीजिए कि हम भविष्य में ऐसी गल्ति न करें।

एक बार और किसी दूसरे मंदिर में हम लोग रूके थे वह भी ऐसा ही गाँव था वहाँ के गाँव वाले भी अपने भगवान को नमस्कार कर रहे थे लेकिन वहाँ के लोग अपने हाथों से ही अपने दोनों गालों में चांटे लगा रहे थे। मैंने उनसे पूछा- तो उन्होंने कहा- हम लोग बहुत सारे पाप करते हैं भगवान दयालु हैं वे हमें दण्ड नहीं देते हैं इसलिए उनके चरणों में आकर हम स्वयं ही अपने आपमें दण्ड ले लेते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि अब ऐसी गल्ति कभी नहीं करेंगे।

बन्धुओ! ऐसा लगता है कि किसी न किसी रूप में यह क्षमावाणी का ही बदला रूप है क्षमावाणी कहो, मैत्रीभाव कहो अथवा बैर-विरोध का समापन कहो सभी पर्यायवाची नाम हैं। क्षमावाणी बैर को खत्म कर देती है। क्षमावाणी अंदर विकार राग-द्वेष को दूर कर देती है।

निर्ग्रन्थ दिगम्बर संत दोनों टाईम के प्रतिक्रमण में एक श्लोक बोलते हैं-

खम्मामि सव्व-जीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्व-भूदेसु बैरं मज्झं ण केण वि।।

अर्थात् मैं प्रत्येक प्राणी को क्षमा करता हूँ। सभी मुझे क्षमा करें सभी में मेरा मैत्तीभाव है किसी से बैर भाव नहीं है। यदि ऐसे उदार भाव हमारे अंदर आने लगे तो परस्पर में वात्सल्य, संगठन एकता बढ़ने लगेंगे।

आज के दिन मैं अपने समूह से माताजी महाराज से सबसे पहले कहना चाहता हूँ कि मैं सभी को प्रायश्चित देता हूँ। कंट्रोल करता हूँ, डाँटता हूँ आप लोगों को उससे काफी कष्ट होता है। कई लोग चाहते हैं मैं यहाँ बैठ जाऊँ अमुख से

बात कर लूँ अमुख वस्तु को ले लूँ। थोड़ी बहुत हँसी-मजाक कर लूँ। थोड़ी क्लास से छूट लेकर आराम कर लूँ आदि आदि भाव लोगों के अन्दर जाग्रत हो जाते हैं। लेकिन सत्य यह है कि आपने अपने आपको सच्चे मन से गुरु चरणों में समर्पित किया है तो गुरु का भी बहुत बड़ा दायित्व बनता है।

जिस व्यक्ति ने आत्म कल्याण के लिए गुरु को समर्पण किया है तो गुरु भी निस्वार्थ वृत्ति से उसे आत्म कल्याण के पथ पर लगाते हैं। जितना संभव हो सकता है उतना वे अन्य कार्यों से ब्रेक लगाकर शिष्य को आत्मोन्नति के कार्यों में संलग्न करते हैं। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि मेरी यह प्रक्रिया आप लोगों को कभी-कभी खराब लगती होगी कष्टदायी प्रतीत होती होगी। लेकिन गुरु होने के नाते भगवान की आज्ञा शास्त्रों और गुरुओं की आज्ञा का हमें पालन करना अनिवार्य होता है फिर भी उसमें यदि किसी का मन दुखा हो तो मैं क्षमाभाव रखता हूँ।

मैंने प्रमादवश दुःख तुम्हें दिया हो
किं वा कभी अनादर भी किया हो
न शल्यमान मन में रखता मुद्रा में
हूँ मांगता विनय से सबसे क्षमा मैं

यदि प्रमादवश मैंने आप लोगों को दुख दिया हो अथवा कभी किसी प्रकार से किसी का अनादर किया हो तो सभी शल्यों को छोड़कर आज आप सभी से विनय से क्षमा मांगता हूँ आप सब मुझे क्षमा करें।

(पूज्य श्री की बात सुन समग्र शिष्य समूह पिच्छियुक्त कर वद्ध एवं सजल नेत्र हो गुरुवर से क्षमा मांगने लगा)

ऐसा क्षमाावणी पर्व हम सभी एक दिन नहीं रोज-रोज मनाते रहे और अपनी आत्मा को, मन को पावन पवित्र करते रहें तो मुझे विश्वास है सभी के हृदय में यह क्षमावाणी धर्म समा जायेगा और मोक्ष का हेतु बन जायेगा।

इसी भावना के साथ आप सभी से भी मैं कहना चाहता हूँ कि हम लोग यूँ तो हर वर्ष क्षमा मांगते रहते हैं लेकिन सही मायने में एक बार भगवान के चरणों में सिर झुका लें, हाथ जोड़ ले और अपने सच्चे देव, सच्चे शास्त्र एवं सभी निर्ग्रन्थ गुरुओं के चरणों में प्रार्थना करें कि हे प्रभु! मैंने कभी भी अज्ञानता से प्रमाद से कषाय से कोई गल्ति की हो आपका अविनय अनादर किया हो, धर्म की अवहेलना कर दी हो तो सभी मुझे क्षमा करें, क्षमा करे, क्षमा करें।

अब आप सभी अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाये जिससे बैर विरोध हो अथवा बोलाचाली न हो उनके सन्मुख पहुँच जाये, यदि ऐसा कुछ न हो तो अपने सन्मुख जो खड़ा हो उसके सामने प्रसन्न मुद्रा से दोनों हाथ जोड़कर सभी लोग बोले ऊँ नमः-३, सबको क्षमा-३, सबसे क्षमा-३, उत्तम क्षमा-३, क्षमा भाव से आप सभी एक दूसरों से गले मिल सकते हैं अथवा मात्र हाथ जोड़कर भी क्षमाभाव कह सकते हैं।

आज का यह क्षमावाणी पर्व प्रत्येक प्राणी के अंदर मैत्री भाव उत्पन्न करने वाला हो, सभी के जीवन में आनंद मंगल करने वाला हो।

।। जय बोलिए क्षमावाणी पर्व की जय।।

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

प.पू.वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर जी महाराज की जन्म जयंति के अवसर पर

स्वप्न में आये गुरुवर

प्रवचन- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज

बन्धुओ! आज पूज्य गुरुदेव विमलसागर जी महाराज की जन्म जयंती हैं। मैं रात्रि में इसी विचार में डूबा था कि कल पूज्य गुरुदेव की जन्म जयंति है। मैं शिष्य हूँ। शिष्य का कर्तव्य ही हैं गुरु का कोई भी उत्सव हो वे अपनी भक्ति प्रदर्शित करें। गुरुओं का उत्सव शिष्यों के लिए भक्ति करने का उत्सव, महोत्सव होता है। मैंने गुरुदेव की भक्ति परख कुछ छंद तैयार किये और उन्हें मन ही मन में गुन-गुनाता रहा। मैं उठकर उन्हें लिखा इसलिए नहीं कि यदि लिखने बैठ जाऊँगा तो पूरी नींद चली जायेगी। फिर भी लगभग १२ बज चुके थे। उन्हीं छन्दों को सोचते-सोचते नींद लग गई। और जब नींद लगी तो स्वप्न में पूज्य गुरुदेव विमलसागर जी और भरत सागर जी महाराज आये। गुरुदेव बड़े ही सुरीले कण्ठ से किसी स्तोत्र आदि का पाठ कर रहे हैं और दूसरी और भरत सागर जी उसे अटक-अटक कर पढ़ रहे हैं। मैं लेट पहुँचा तो उनके पीछे बैठ गया। महाराज भरत सागर जी को समझा रहे हैं इसके बाद मैंने उन्हें रात्रि में बनाये गये वे ही संस्कृत श्लोक के छंद सुनाना चाहे इतने में विहितसागर महाराज ने घड़ी दिखाते हुए इशारा किया तीन बज गये। मैंने सोचा कम से कम श्लोक तो सुन लेने देते।

बन्धुओ! परम पूज्य गुरुदेव विमलसागर जी महाराज को कौन नहीं जानता है दुनियाँ के सभी व्यक्ति उन्हें जानते हैं सभी के परिवार पर उनकी करूणा की बारिस बरसी है।

पूज्य गुरुदेव की सबसे बड़ी बात यह थी कि वे निमित्त ज्ञानी थे इस कारण किसी के भी चेहरे को देखकर वे आगे-पीछे की सारी बाते बता देते थे।

जब हम लोग परमणी में थे और आचार्य गुरुदेव का संघ कचनेर जी में था। हमारे साथ हेमसागर जी नाम के एक मुनि महाराज थे उस समय हम क्षुल्लक थे एक ब्रह्मचारी भी हमारे साथ थे। हम लोगों ने कहा- चलो अपन दर्शन कर आये बड़ा संघ है और परम पूज्य आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज के गुरु हैं। इसलिए अपने दादा गुरु है। साधुजन बहते पानी की तरह होते हैं न उनके पास कार होती है न वे कार आदि बाहन में चलते हैं कि चाहे जहाँ मिल जाओ। ये अवसर तो बड़े सौभाग्य पुण्य से प्राप्त होते हैं। क्या पता फिर कब कहाँ अवसर आयेगा।

हेमसागर जी ने कहा- इतनी जल्दी कैसे हो सकता है अपन जब तक पहुँचेगे तब तक तो उनका विहार ही हो जायेगा। हाँ आप दोनों गाड़ी से जा सकते हो। आप चले जाओ, दर्शन कर आओ। हमने और ब्रह्मचारी जी ने विचार बनाया और दर्शन करने के लिए कचनेर पहुँच गये। जैसे ही भगवान के दर्शन के बाद गुरुदेव के सामने पहुँचे तो उन्होंने तो देखते ही कह दिया। ये दो दीक्षार्थी आ रहे हैं। मैंने कहा- भगवन् नमोस्तु दर्शन करने आये हैं, दीक्षा लेने नहीं। बोले तुम्हारी दीक्षा तो हमारे से ही होगी और जल्दी होगी। चूंकि तब तक हम लोग आचार्य महाराज से ज्यादा परिचय में नहीं थे। और जहाँ हम लोग अध्ययन कर रहे थे वहाँ तो समाज मुनि निंदा करती थी। गुरुदेव विमलसागर जी के विषय में कहते थे वे दूसरों का हिंत करते रहते हैं आत्म साधना कब करते होंगे ? आदि-आदि इसलिए हमारे ऊपर भी उन बातों का कुछ प्रभाव था। मैंने विचार किया कि देखों लोगों को ऐसे पटाया जाता है। ये तरीका अच्छा है अपनी ओर खीचने का आदि -आदि। उसी दिन जहाँ गुरुदेव का संघ रूका था उसी हॉल में हमें रूकने का अवसर मिला तो उसी में सभी महाराज थे इसलिए और कहीं तो जगह नहीं मिली। महाराज के चरणों के नीचे स्थान था वहीं हम लोगों ने शयन किया।

रात्रि के ११ बजे होंगे उसी समय आचार्य श्री उठकर के जाप्य करने बैठ गये, उसके बाद आचार्य श्री का ध्यान शुरु हो गया। विभिन्न मुद्राओं में उनका ध्यान सारी रात्रि चलता रहा। मुझे नींद नहीं आई मैं थोड़ी-थोड़ी देर में दुप्पट्टा खोलकर देखता तो महाराज अपनी साधना में तल्लीन दिखते। तब मुझे लगा कि हमलोग भी कैसे मूर्ख है जो लोगों की बातों में आ जाते हैं। लोग करीब से तो देखते नहीं और साधकों की निंदा करना प्रारंभ कर देते हैं। इतने महान आत्म साधक के विषय

में कुछ का कुछ कहकर लोग व्यर्थ ही स्वयं एवं दूसरे को पाप का भागी बना रहे हैं। धिक्कार है ऐसी बुद्धि, ऐसे व्यक्तियों तथा उनकी बातों में आने वाले लोगों को। उसी समय से मेरा मन परिवर्तित होने लगा। प्रात: मैंने महाराज से पूछा गुरुदेव आप रात्रि भर विभिन्न मुद्राओं में किस-किस का ध्यान कर रहे थे। तब उन्होंने सभी ध्यानों की मुद्रा पुन: बताते हुए मुझ समझाया इस प्रकार पंच परमेष्ठी का, इस तरह पंचमेरु तथा इस तरह चौबीस तीर्थंकर आदि का ध्यान कर रहा था।

बन्धुओ! गुरूदेव विमलसागर जी अपने मस्तिष्क पर पूरे सम्मेद शिखर तीर्थक्षेत्र का ध्यान करते थे। अनेकों प्रकार के ध्यान वो करते थे तथा कभी पांच, तीन, एक, सात आदि अंकों के माध्यम से वे यंत्रों की रचना भी ध्यान में कर लेते थे तो कभी पूर्वानुपूर्वी, पश्चातानुपूर्वी तथा याथ तत्यानुपूर्वी के अनुसार चौबीस तीर्थंकरों की जाप्य करते थे। ऐसे महान ध्यान पूज्य गुरुदेव थे।

एक बार कड़कड़ाती ठण्डी में उनके संघ का विहार हो रहा था आर.के. जैन जी के पिताजी श्रीपाल जैन उनके अत्यंत निकट रहते थे। चलते-चलते जंगल में ही रात्रि हो गई और महाराज विहार बंद कर वहीं जंगल में रूक गये। ठण्डी के मौसम में एक वृक्ष के नीचे रात्रि व्यतीत की रात्रि के बीच में श्रीपाल जी ने जब महाराज को देखा तो वे खड़े होकर ध्यान कर रहे थे और उनके शरीर से पसीना निकल रहा था। श्रीपाल जी तो घबरा गये कि क्या महाराज का स्वास्थ्य ठीक नहीं है या वी.पी. बढ़ रहा है इतनी ठण्डी में ये पसीना क्यों वह रहा है। प्रात: पूछा तो महाराज ने कहा- ठण्डी बहुत थी इसलिए आज मैं अग्निधारणा का ध्यान कर रहा था उसी की गर्मी से शरीर से पसीना बहने लगा था। बन्धुओ! ऐसा प्रगाड़ ध्यान था आचार्य महाराज का।

महाराज ने मुझे मुनिदीक्षा देकर मेरे ऊपर असीम उपकार किया था। समय-समय पर संबल एवं अपार वात्सल्य का रस बरसाया था। आज उनके वे सभी उपकार मुझे याद आ रहे हैं। मधुवन में आकर तो मुझे ऐसा लगा मानो मैं साक्षात् गुरुदेव के चरणों में ही आ गया हूँ। हमारे गुरुदेव हमसे दूर नहीं है हमारे पास ही है। उन्हीं के चरण सान्निध्य में ये मधुवन का चातुर्मास सानंद सम्पन्न हो रहा है।

अंत में गुरुदेव से यही प्रार्थना करता हूँ कि हे गुरुदेव जिस प्रकार अभी तक आपका आशीर्वाद और संवल मुझे मिलता रहा है। स्वप्न में आकर भी आपने मुझे साहस एवं संवल प्रदान किया है। वैसा ही आगे भी मिलता रहे जब तक मुझे मोक्ष की प्राप्ति न हो तब तक आपके चरणों की भक्ति मुझे प्राप्त होती रहे।

सभ्य-असभ्य शिष्य

सभ्य और असभ्य शिष्य की पहिचान है कि सभ्य शिष्य दोषों से भयभीत रहता हैं, उससे कदाचित गल्ती हो भी जाये तो वह गुरु के सामने सत्य आलोचना करता है, किन्तु जो असभ्य अविवेकी शिष्य जिसे कर्मों से भय ही नहीं वह अपराध स्वीकार नहीं करता और न उसको पश्चाताप होता है। वह तो बेशरम शाखा की तरह, काट देने पर भी पुन: पनप जाता है। यू तो संसार में सभी से भूलें होती हैं परन्तु सतत भूलों से भरी चर्या जीवन को नष्ट कर देती हैं आत्म विशुद्धि को गिरा देती है इसलिये सभ्य शिष्य ज्ञान चक्षुओं से भीतर छुपी कलुषता का अनुभव करता है और आत्मा ग्लानि से भर जाता है, स्वयं ही पश्चाताप के आसुओं से भरकर गुरु चरणों में गल्तियों का प्रक्षालन कर मन को निर्मल कर लेता है वह सोचता है, मानव जीवन एक चिन्तामणि रत्न के समान दुर्लभ है। कब अंत हो जाय पता नहीं, अत: अभी से किये पापों का पश्चाताप कर हम सावधान हो जायें। पश्चाताप सुधार का बीज है, जिस पर भविष्य की अच्छाईयों की इमारत खड़ी हो सकती है।

जबकि असभ्य शिष्य इन सबसे विपरीत वृति वाला होता है, छोटी छोटी बातों में अपने संतुलन को खोकर अपने अविवे के कारण संयम से भी हाथ धो बैठता है। अत: असभ्यता को त्याग सभ्य बनने का प्रयत्न करो।

साभार-समयोचित शिक्षायें

प.पू.वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर जी महाराज की जन्म जयंति के अवसर पर

गुरु वंदना

लेखक - प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज

(वसंत तिलका)

मिथ्यात्व मान मर्दन तुमने किया है,
आरंभ वा विषय कषायों को तजा है।
धारी सुरत्नत्रय जो जिन आत्म वस्तु,
सौभाग्य मान गुरु को शतश: नमोस्तु।। १।।

संसार सागर अति खारा अपारा,
हम डूबते को गुरुवर तेरा सहारा।
सौभाग्य से गुरुवर जिसको मिले है,
आशीष पा नियम से भव से तिरे है।। २।।

संसार जंगल महा सब जंगलों में,
गुरुदेव ही सर्व मंगल मंगलो में।
सौभाग्य से मिल गई मुझको ये वस्तु,
चरणार विंद गुरु के मेरा नमोस्तु।। ३।।

अज्ञान मान मन में मेरा भरा था,
तेरी कृपा गुरुवर सहसा हटा था।
हे दीनबंधु! गुरुवर अमूल्य वस्तु,
मै बार-बार करता तुमको नमोस्तु।। ४।।

हे मोक्ष के पथिक गुरुवर नमोस्तु,
सन्मार्ग गामी गुरुवर तुम्हें नमोस्तु।
वो मोक्ष का पथ सदा मुझको दिखाओ,
संबल प्रदान कर चलना सिखाओ।। ५।।

छहकाय रक्षक सदा आरंभ त्यागी,
मन अक्ष सैन्य जड़ से तुमने विनाशी।
शुद्धात्म साधक रहे है रत्नत्रयी जो,
सदा वंदनीय श्रमण संघों से रहे वो।। ६।।

हे दीनबन्धु गुरुवर तुम्हें नमोस्तु,
दो आसरा गुरुवर तुमको नमोस्तु।
उपकार को कभी न भुला सकूँगा,
पा मोक्ष मंजिल उसे पाकर रहूँगा।। ७।।

सत्यार्थ से सुपथ पे चलते सयाने,
शिवमार्ग पे चलना मुझको सिखाते।
गुरुदेव ही जगत की निर्मूल्य वस्तु,
त्रय भक्ति से चरण में करता नमोस्तु।। ८।।

जिन्होंने 111 समाधि कराई हो

प.पू. श्रमणाचार्य सुबलसागर जी महाराज

प्यारे बन्धुओ! कुल लोग पुण्य के लिए हेय मानते हैं समयसार का उदाहरण देते हैं सत्य हैं समयसार में पुण्य को हेय कहा है, तो पाप भी हेय कहा है। लेकिन ध्यान रखें आज आप यहाँ बैठे हैं तो आप किसी न किसी भव के पुण्य से बैठे हैं। कौन भगवान के दर्शन कर पाता है, कौन दीक्षा धारण कर पाता है, कौन समाधि मरण कर पाता है जिसकी सत्ता में पुण्य है।

भगवान के चरणों में यदि कुछ मांगने का अवसर मिले तो मांग लेना कि हे प्रभु मेरा समाधि मरण हो जाये। सम्यत्व पूर्वक समाधि मरण हो।

संसार में मिथ्यात्व के साथ वालबाल मरण करने वाले बहुत होते हैं किन्तु सम्यकदृष्टि जीव होकर बाल मरण करने वाले कम होते है और उससे भी कम सम्यग्दर्शन और उसके साथ व्रत नियम लेकर, प्रतिमाएँ लेकर जो मरण करते हैं उनका बाल पण्डित मरण होता है। और चौथा पण्डित मरण महाव्रतों की साधना करने वाले मुनिराजों का होता है। उनका समाधि मरण पण्डित मरण कहलाता है।

बन्धुओ! मैं अपने कमरे में था मेरे पास समाचार आया आचार्य श्री (विरागसागर जी महाराज) बुला रहे है मैं जैसे ही पहुँचा तो आचार्य महाराज उसी भव्य जीव को संबोधन दे रहे थे ७ प्रतिमा के व्रत दिये।

गुरुओं की दृष्टि बड़ी पारखी होती है ललितकुमार जी जैसे ही आये आचार्यश्री ने उन्हें अपने पास के योग्य स्थान पर रखने की व्यवस्था की यथा समय संबोधन दिया। मैंने कमरे में उनकी हालत देखी वे वेहोश पड़े थे लेकिन जैसे ही ७ प्रतिमा दी तो वे दीक्षा की प्रार्थना करने लगे अपने वस्त्र उतार कर फेंकने लगे और आचार्य श्री ने जैसे ही दीक्षा के संस्कार करना प्रारंभ किया तो वे उठकर बैठ गये और बैठे-बैठे गुरु चरणों में वीर मरण किया। पण्डित मरण किया निश्चित ही उनका प्रबल पुण्य था इसीलिए आचार्यश्री ने उनका नाम विश्वपुण्य सागर जी रखा।

बन्धुओ! इस पंचम काल में पंडित मरण नहीं होता है क्योंकि वह अरहंत भगवंतों का होता है किन्तु पण्डित मरण होता है और इसका इतना महत्व है कि उत्कृष्ट से मात्र दो, तीन भव और जघन्य से ७-८ भव में साधक निर्वाण प्राप्त कर लेता है।

प्रिय आत्माओं! आचार्यों की महिमा भी बड़ी महान होती है उनका अनुभव ज्ञान बहुत बड़ा होता है। उनकी पारखी दृष्टि बड़ी ही अनुपम होती है। मैं तो भावना भाता हूँ कि मेरी सल्लेखना समाधि भी परम पूज्य गणाचार्य विरागसागर जी महाराज के चरणों में हो क्योंकि जिन्होंने १११ सफल सल्लेखना समाधि कराई हो उनके अनुभव का क्या कहना, उनकी अपरिमित प्रज्ञा के विषय में तो हम सोच भी नहीं सकते। जिन्हें क्षपक की हर समय की स्थिति का ज्ञान रहता है कब किसे किस समय कैसा संबोधन देना है इसकी अच्छी परख हैं ऐसे निर्यापकाचार्य से बढ़कर और क्या हो सकता है निश्चित ही इनके चरणों में जिनकी भी सल्लेखना समाधि हुई उनका जीवन सुधर गया। आप सभी भी ऐसी भावना भाये कि हमारा जब भी मरण हो सल्लेखना समाधि के साथ हो।

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अतः सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

मीठे पानी से कीमती संयम

समाधिस्थ श्रमण मुनि विश्वस्त सागर जी

परम पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि जीवन में सबसे कीमती वस्तु है तो वह है संयम। संयम के बिना सब व्यर्थ है। संयम ही सुख का कारण है और असंयम ही दु:ख का कारण है। संयम है तो कष्टों में भी सुख शांति है और यदि संसार नहीं है तो सुख-सुविधाओं में भी कष्ट हैं।

२५मई २०१७ को यति सम्मेलन और युगप्रतिक्रमण के विशाल कार्यक्रम के पश्चात् दिल्ली की ओर विहार हुआ। तापमान ४७-४८ डिग्री ऊपर से सूरज की तपन, नीचे से रास्ता गर्म और चारों दिशाओं से गरम-गरम लपटें जिसके कारण गला सूख गया, शरीर तप्त हो गया लेकिन परम पूज्य आचार्य श्री के आशीर्वाद से मन प्रसन्नचित्त था।

व्यवस्थापकों ने आकर निवेदन किया- परम पूज्य आचार्य श्री पानी बहुत खारा है मानो पानी में नमक मिला दिया हो, आस-पास में कहीं पर भी मीठा पानी नहीं है इसलिए वाहन के द्वारा दूसरे स्थान से पानी ला सकते हैं क्या ? परम पूज्य गुरुदेव ने कहा- नही ! क्योंकि रास्ते में नाली का गंदा पानी, विष्ठा, प्राणी के क्लेवर आदि को देखकर आप निकल सकते हैं लेकिन वाहन उस गंदी सामग्री से बचकर नहीं निकल सकते हैं। वाहन से लाया गया पानी पूर्णत: अशुद्ध है संयम का विनाशक है आगम की चर्या के प्रतिकूल है अत: वाहन से लाया हुआ पानी आहार चर्या में सर्वथा निषिद्ध है। परम पूज्य गुरुदेव ने कहा- खारा पानी भी अच्छा है क्योंकि नमक की पूर्ति करेगा, भोजन में नमक की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। परम पूज्य गुरुदेव ने कहा- मीठे पानी से कीमती संयम है, संयम की मिठास के आगे सबकी मिठास फीकी है। संयम है तो सब कुछ है और यदि संयम नहीं है तो कुछ भी नहीं। संयम रूपी अमृत से सबकी प्यास बुझ जायेगी। अत: परम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से खारे पानी के द्वारा भी सबकी प्यास बुझ गयी।

कई लोग शार्ट मार्ग से निकल जाते हैं

श्रमण मुनि सुपार्श्वसागर जी महाराज

यह संसार बड़ा विचित्र है यहाँ कई लोग शॉर्ट मार्ग से निकल जाते हैं और हम जैसे लोग देखते रह जाते हैं। नगर के लोगों को भी पता नहीं चल पाया और उन्होंने अपना कार्य कर लिया। श्रमण मुनि विश्वपुण्य सागर जी महाराज ने ऐसा ही किया झट मंगनी पट विवाह सभी देखते रह गये और वो अपनी आत्मा का कल्याण कर गये।

इसके पहले भी यहाँ २ समाधियाँ और हुई थी वो भी ऐसी ही पतली गली से निकल गये। आये दिन कीड़े-मकोड़े की तरह जीव मर रहा है जहाँ देखों वहीं के श्मशान भरे हुए हैं लेकिन वे विरले ही जीव होते हैं जो गुरु चरणों में आकर समाधि मरण कर पाते हैं। विश्वपुण्य सागर जी ऐसे ही थे जिन्होंने भले ही जीवन में कुछ नहीं किया किन्तु अंत समय सुधार लिया।

उनका पुत्र निखिल २० दिन पहले मेरे पास आया था उसने कहा- महाराज ! पिता जी की स्थिति बड़ी ही नाजुक हो रही है उन्हें बीमारी परेशान कर रही है। केन्सर हो गया है डॉक्टर ने जवाब दे दिया है क्या करें। मैंने कहा- घबराओं नहीं, यहाँ दो-दो आचार्य विराजमान हैं इनके चरणों में ले आओ। वे आये और प.पू. गणाचार्य विरागसागर जी महाराज ने भी उन्हें इतने अच्छे तरीके से संभाला कि उन्होंने दीक्षा लेकर चारों प्रकार के आहार का त्याग करके अपने मरण को समाधिमरण महोत्सव बना लिया। ऐसा समाधि मरण मेरा तो हो ही संसार के सभी जीवों का भी ऐसा ही समाधि मरण महोत्सव हो।

निर्मलता बढ़ती जा रही है

मुनि विश्वलोचन सागर जी महाराज

सारी दुनियाँ की तरह अगर दृष्टिपात करें तो वह जन्म का ही महोत्सव मनाती है लेकिन मरण का भी महोत्सव होता है यह बिरलों को ही याद रहता है।

कहते हैं जीवन भर तक साधना करो तब समाधि मरण हो पाता है लेकिन बड़ा आश्चर्य है कि जिन्होंने जीवन में कभी कोई साधना नहीं की रात्रि पानी त्यागने में भी जिन्हें सोचना पड़ रहा था ऐसे जीव भी गुरु कृपा से धन्य हो गये। एक ऐसा जीव जिसे गुरुदेव ने संबोधन दिया और वो संबोधन उसकी आत्मा को प्रभावित कर गया। उन्होंने मुनि दीक्षा की प्रार्थना की और गुरुदेव ने जब दीक्षा दी तो वे लेटे से बैठ गये। इधर दीक्षा संस्कार चल रहे थे उधर उनकी आत्मा परिणति निर्मलता की ओर बढ़ती जा रही थी और मात्र १० मिनट में मुनिदीक्षा के उन विशुद्ध परिणामों के साथ ही उन्होंने अपने अंतिम लक्ष्य समाधि मरण को प्राप्त कर लिया। निश्चित ही ऐसे जीवों की विशिष्ट गति होती है और वे शीघ्र हो मोक्ष जाते हैं ये सारा उपक्रम एकमात्र गुरु प्रसाद से प्राप्त होता है अत: ऐसे गुरुचरणों की निरंतर सेवा भक्ति करना चाहिए।

विशेषज्ञ बन चुके हैं

श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माता जी

परम पूज्य राष्टसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज सल्लेखना समाधियाँ कराने में विशेषज्ञ बन चुके हैं क्योंकि आपके कुशल निर्यापकाचारित्व में १-२ नहीं १११ सफल सल्लेखना समाधियाँ हो चुकी हैं। आप सल्लेखना समाधि में स्थित क्षपक की नश-नश को अच्छी तरह जानते हैं।

आपने मुनिश्री विश्वजिन सागर जी महाराज की सल्लेखना समाधि के समय कहा था कि सल्लेखना समाधि होने में १२ तो बजेंगे। यद्यपि उस वक्त पास में बैठे हुए डॉक्टर ने मात्र आधे घंटे का समय शेष बताया था किन्तु फिर भी वहाँ आपके कथनानुसार ठीक १२.०० बजे ही उसकी सल्लेखना समाधि हुई थी। धन्य है ऐसे महान गुरु जो लौकिक पूजा ख्याति लाभ की भावना से परे होकर प्राणीमात्र के कल्याण में संलग्न रहते हैं सृष्टि के सभी जीव अपना कल्याण कर संसार के दुखों से बचें ऐसी मंगल भावना रखते हैं ऐसे पूज्य गुरुदेव के चरणों में बारम्बार नमोस्तु करती हूँ।

कितने कर्म उदय घिर आये

कितने कर्म उदय घिर आये, क्षमता भाव बनाना होगा।
कभी नहीं घबराना चेतन, खुद को अरे जगाना होगा।।
जीवन मिला धर्म से बंधु,
प्रभु का अब तुम ध्यान करो।
तभी भावना सुन्दर होगी,
सबका अब तुम कल्याण करो।।
पर वस्तु से राग घटाओं, सुख का मार्ग बनाना होगा।
कितने कर्म उदय घिर आये, समता भाव बनाना होगा।।
मोह कर्म यह सदा रूलाता,
अनेक पंघ करवा आता है।
इससे बचकर दूर रहो,
यह नीच गति को करता है।।
अंतर ज्योति जलाओं बन्धु सम्यक शान कराना होगा।
कितने कर्म उदय घिर आये, समता भाव बनाना होगा।।
जीवन कितना यह अमोलय है,
पर अंतर में कितना भूल है।
विषयों में खो गया मन है,
पर करता नाही साधन है।।
जागों चेतन क्यों सोये हो, ज्ञान सुधा रस पीना होगा।
कितने कर्म उदय घिर आये, समता भाव बनाना होगा।।
धर्म ही अपना साथी होगा,
इसको अपना बनाना होगा।
ज्ञान भावना भानी होगी,
सुख को मंजिल पानी होगी।।
तभी करुण से दूर हटोगे, मुक्ति पथ पर आना होगा।
कितने कर्म उदय घिर आये, समता भाव बनाना होगा।।

रच. कांति कुमार जैन 'करुण' खिमलासा

गुरु के प्रति शिष्यों के कर्त्तव्य

श्रमण मुनि विश्वभद्र सागर जी

शिष्य का शिष्यत्व उसकी कर्त्तव्यनिष्ठा से पता चलता है जब शिष्य के अन्दर कर्त्तव्य शीलता आ जाती है तो वह संघ व गुरु विषयक छोटे से छोटे या बड़े से बड़े कर्त्तव्य को बड़े मनोभाव से करता है क्योंकि समर्पित शिष्य कर्त्तव्यों को अपना सौभाग्य मानता है। वह उन कार्यों को खुशी से करता है जबर्दस्ती से नहीं। ऐसे अनेकानेक गुरु एवं संघ विषयक कर्त्तव्य हैं जिससे हम गुरु के सहयोगी बनकर असीम पुण्यार्जन कर सकते हैं। जैसे-

- ❖ प्रात: कालीन जब गुरु के दर्शन करें तो सिद्ध श्रुत आचार्य भक्तिपूर्वक आचार्य वंदना कर गुरु के चरण छुयें (महाराज लोग)।
- ❖ गुरु के बैठने हेतु गुरु के आने के पूर्व ही देख लें कि पाटा या सिंहासन आदि व्यवस्थित रूप से लगा है कि नहीं, यदि नहीं तो शीघ्र ही स्वयं उसकी व्यवस्था करें इसमें कोई देरी या प्रमाद न करें।
- ❖ गुरु यदि निहार आदि के लिये जा रहे हैं तो उनका कमण्डल लेकर स्वयं साथ जायें क्योंकि गुरु कहीं भी जायें, शिष्यों का कर्त्तव्य है ४-५ शिष्य हमेशा गुरु के साथ जायें।
- ❖ जब गुरु प्रवचन या स्वाध्याय अथवा अन्य कार्यक्रम हेतु जायें तो सभी शिष्य अर्थात् पूरा संघ एक साथ गुरु के साथ जायें, आगे पीछे न जायें क्योंकि जब गुरु संघ एक साथ पंक्तिबद्ध होकर चलता है तो धर्म प्रभावना भी होती है और देखने वाले को भी अच्छा लगता है।
- ❖ प्रवचन के समय स्वयं भी अनुशासित रूप से बैठे एवं सभी शिष्यों को भी व्यवस्थित एवं अनुशासित रूप से बैठने का निर्देशन दें।
- ❖ गुरु जब सामायिक या स्वाध्याय या अन्य कोई विशेष कार्य कर रहे हो तो दर्शनार्थियों को वात्सल्य के साथ कंट्रोल करें जिससे उन्हें बुरा भी न लगे और गुरु के लेखन अध्ययन में व्यवधान भी न आये।
- ❖ कतिपय शिष्य यदि अनुशासित पद्धतियाँ का पालन न कर रहें हो तो धीरे से गुरु को इस बारे में बताना चाहिये हो सके तो पहले उन्हें भी समझाने का प्रयास करना चाहिए।
- ❖ यदि स्वयं से कोई गल्तियाँ हो रही हैं तो उन दोशों की आलोचना गुरु से निश्छलता पूर्वक करना चाहिए जिससे हमारा संयम निर्मल बना रहे।
- ❖ गुरु से यदि कोई आज्ञा-अनुमति लेना हो तो पूर्ण विनय के साथ हांथ में पिच्छी लेकर गवासन मुद्रा में बैठकर ही लेना चाहिए।

उक्त कर्त्तव्यों की परिपालना करने से शिष्य का शिष्यत्व झलकता है। हर शिष्य को कर्त्तव्यों का निर्वहन करना आवश्यक हुआ करता है यद्यपि गुरु उपकार के सामने शिष्य की सारी भक्ति बहुत न्यून ही हुआ करती है किन्तु फिर भी अधिक से अधिक अपनी भक्ति प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए।

महत्वपूर्ण जानकारी

परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर ससंघ कहाँ विराजमान हैं, जानने के लिए Google अथवा किसी भी इंटरनेट Browser पर जाकर टाईप करें।

Viragsagar.trackerbox.co.in जो Location दिखाएँ उसे बड़ा करके उसके विषय में तथा आस-पास की Location के विषय में जाना जा सकता है।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ

श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माता जी

(१)

नारी न होती तो क्या होता ?
एक बच्चे ने पूछा -
टीचर बोले - क्या पूछ रहा है ?
न मैं होता - न तू होता
बच्चा बोला - फिर तो स्कूल न होता
टीचर बोले - हाँ, ये भी माँ ने बनवाया
पर ये बता - क्या तू होमवर्क करके नहीं आया
बच्चा चुप रहा, बड़ी देर बाद बोल पाया
सर, बात तो यही है
वर्ना कौन नहीं जानता कि
टीचर से बढ़कर मम्मी है।।

(२)

एक बच्चा बहुत रोया
रात भर नहीं सोया
सुबह नींद आने को थी कि
माँ ने चेहरा धोया
स्कूल बस आ गयी
क्या बात है ?
बच्चा उठ गया-
मैं समझा था रात है
बिना नहाये, बिना खाये
बिना टिफिन लिये
अनुत्साह से बैग कंधे पर टांगा
स्कूल ड्रेस पहनकर ही सो रहा था
इसलिए बस की तरफ भागा
वहाँ आज बस छूट गयी
उसने दूसरी बस कर ली
स्कूल लेट से पहुँचा था वो
जाकर फाइन भर दी
टीचर ने फिर खबर ली
क्यों आलसीराम, होमवर्क नहीं किया,
माँ ने कैसे घटिया संस्कार दिये हैं
सोती रही- तुझे सोने दिया
बच्चा क्रोध में आया
सर, मुझे डाँटो या मारो
पर मेरी माँ तक मत पहुँचो
पापा के बाद मुझे कैसे पाल रही है
मेरी जगह बैठकर सोचो
सर पिघल गये
इतने दिन से बता देता
तो मैं तुझसे
लेट फीस नहीं लेता
बच्चा बोला- माँ के पास पैसा कम है
कम लेकिन संस्कार नहीं
सब कुछ स्वीकृत कर लूँगा मैं
माँ की निंदा स्वीकार नहीं।

भावना

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

आत्म साधक की
भावना,
होती है
आत्म साधक की
साधना।
साधना में नहीं
कामना
कामना में नहीं
साधना,
आत्मसिद्धि
का हेतु है
साधना।
यही है सम्यक्
उत्कृष्ट भावना।...

णमोकार मंत्र का प्रभाव

संकलन- श्रमणी आर्यिका विप्रा श्री माताजी

मेरु नाम के सेठ जी की धरणी नामक स्त्री से पद्म रूचि नामक पुत्र हुआ। उसी नगर में एक छत्रच्छाया नाम का राजा रहता था उसकी दत्ता नाम की रानी थी। एक दिन पद्म रूचि घोड़े पर बैठकर अपने गोकुल की ओर आ रहा था। उसको मार्ग में पृथ्वी पर पड़ा हुआ एक बूढ़ा बैल दिखा सुगन्धित वस्त्र और माला को धारण करने वाला वह पदम रूचि घोड़े से उतरा और आदर पूर्वक बैल के पास गया उसके कानों में पंच नमस्कार मंत्र का जाप सुनाया। जब वह मंत्र सुन रहा था तभी उसके प्राण निकल गये। मंत्रक के प्रभाव से वह बैल मरकर उसी नगर के राजा छत्रच्छाया की दत्ता रानी से 'वृषभध्वज' नाम का पुत्र हुआ। पूर्व कर्मों के संस्कार से अपने पूर्व जन्म का स्मरण हो गया। बैल पर्याय में बोझा ढोना, शीत, उष्ण, आतप आदि दारूण दुख उसने भोगे थे। और जो णमोकार मंत्र सुना था वह सब ध्यान में आ गया। किसी एक दिन वह बिहार करता हुआ उस स्थान पर पहुंचा जहाँ पर वह बैल मरा था सभी स्थान को पहचान लिया।

वृषभध्वज राजकुमार हाथी से उतरा बहुत देर तक उस स्थान को देखता रहा और समाधि मरण रूपी रत्न के दाता उत्तम चेष्टाओं से सहित वह बुद्धिमान पदमरूचि जब नहीं दिखा तब उसको देखने के लिए एक जिन मंदिर बनवाया। मंदिर के द्वार पर उसने पूर्व भव का चित्र पट लगवाया तथा उसकी परीक्षा के लिए चतुर मनुष्य उसके समीप खड़े कर दिये। पदम रूचि एक दिन वन्दना की इच्छा करते हुये मंदिर में आया और हर्षित चित्त होते हुये उस चित्र को देखने लगा आश्चर्य चकित हो जब वह देख रहा था तब वृषभध्वज के सेवको ने उसे देख लिया और सारा समाचार जाकर सुना दिया। विशाल संपदा से सहित वह राजकुमार इष्ट की इच्छा करता हुआ हाथी पर सवार होकर वहाँ आया। पदमरूचि को उसने पहचान लिया और उसके चरणों में नमस्कार किया। 'पदम रूचि' ने उसक लिए बैल के दुख पूर्ण मरण का समाचार कहा जिसे सुनकर वह राजकुमार बोला वह बैल मैं ही हूँ।

जिस प्रकार उत्तम शिष्य गुरु की पूजा कर संतुष्ट होता है उसी तरह वृषभध्वज पद्मरूचि की पूजा कर संतुष्ट हुआ। पूजा करने के बाद राजकुमार ने पद्मरूचि से कहा कि मृत्यु के संकट में प्रिय बन्धु दयालु होकर समाधि प्रदान व जो मंत्र आपने सुनाया था उसी पंच नमस्कार मंत्र के प्रभाव से हमें मनुष्य पर्याय मिली है। तुमने जो भला किया वह कोई नहीं कर सकता है आपने जो श्रवणदान नमस्कार मंत्र का दिया वह मैं नहीं चुका सकता। आप में मेरी परम भक्ति है अपना सब कुछ उसको समर्पित कर दिया व दोनों को सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई।

पद्म पुराण भाग-३

रात्रि भोजन जान लेवा

संकलन- श्रमणी आर्यिका विसंयोजना श्री माताजी

एक दिन भेलसा के एक भाई त्रिलोकचन्द्र जी अपने लेन-देन के कारण नर्वदा गांव आये और रात अपने आसामी (किसान) के घर पर रहे। उस किसान ने अपने सेठ त्रिलोकचंद्र जी की मेजबानी भोजन से की। उस समय घर में पानी नहीं था। किसान अन्धेरे में जल्दी से जाकर पास ही के एक कुएँ से पानी का एक मोटा सा मटका भर लाया। दुर्भाग्य से उस मटके में एक छोटा साँप भी आ गया। किसान की पत्नी ने बिना छाने ही पानी हांड़ी में उड़ेल दिया और चूल्हे पर चढ़ा दिया। सांप भी तब हांडी में आ गया था। ऊपर से उसमें चावल डाल दिये गये। कुछ देर बाद भाई त्रिलोकचंद्र जी भोजन करने को बैठे गए। पहले ही कौर में, वह लम्बा सा सांप उनके हाथ पर जा पड़ा। वे चिल्लाये 'अरे यह क्या?' देखा तो सांप? भाई त्रिलोकचंद्र जी के हाथ पैर ढीले पड़ गये। कलेजा उनका सिहर उठा। उस दिन से रात्रि भोजन न करने की शपथ ही खा गये और समझ गये कि जैनियों के साधु लोग जो रात्रि में भोजन का निषेध करते हैं वो बिल्कुल सच है, सार गर्भित है, धर्ममय है।

साभार- (वैज्ञानिक दृष्टि में रात्रि भोजन कृति से)

भव्या को मिला पुर्नजीवन

श्रमणी आर्यिका विजिज्ञासा श्री माताजी

यतियों का पदविहार भी भव्यात्माओं के पुण्योदय से हुआ करता है क्योंकि जिन स्थानों के लोगों का अनेकानेक भवों में संचित किये गये पुण्य का जब उदय आता है तभी भावलिंगी साधकों का सान्निध्य उन्हें प्राप्त हो पाता है कुछ ऐसा ही पुण्य है भिण्ड वासियों का जिन्हें असीम पुण्योदय से यतिराज प.पू. गणाचार्य भगवन् के ५ चातुर्मास भिण्ड में कराने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं २०१६ मे पुनः ६वाँ चातुर्मास प्राप्त हो रहा था।

वर्षायोग प्रारम्भ होते ही वर्षा के साथ वीतराग विराग रूपी अमृतमयी निर्झरणी में सभी सराबोर हो रहे थे जब पू. गुरुदेव दोपहर के स्वाध्याय हेतु चैत्यालय मंदिर में ससंघ आसीन होते तो जनमानस गुरुवाणी को सुन भक्तिविभोर हो उठते चातुर्मास दौरान प.पू. गणाचार्य भगवन् के आशीष से ऐसी अनेक चमत्कारिक घटनाएं घटी जिन्होंने जनमानस की श्रद्धा को और अधिक मजबूती प्रदान की कुछ ऐसा ही प्रसंग तब देखने मिला। जब श्रीमती नेहा जी की पुत्री भव्या जिसे जन्म से ही मस्तिष्क में पस बनती थी एवं उसे निकलवाने हेतु प्रतिमाह उन्हें अहमदाबाद जाना पड़ता है मस्तिष्क में पस बनने के कारण भव्या के शारीरिक वृद्धि भी नहीं हो पा रही थी। जिससे उस ७ माह की बच्ची की बच्ची का शरीर ऐसा लगता था मानो तुरंत की नवजात शिशु ही हो इसलिये डॉक्टर ने भी कह दिया था कि ये ज्यादा अधिक दिन तक जीवित नहीं रह सकती। ऐसा सुन यद्यपि सभी को चिंता तो हुई किन्तु होनी को कौन टाल सकता है जब डॉक्टर ने बोल ही दिया है कि वह कुछ दिन की ही मेहमान है तो क्यों न शेष बचे समय को धर्मध्यान के साथ बिताये पता नहीं अगले भवों में इसे जिनेन्द्र देव एवं सम्यग्ज्ञान प्रदान करने वाले प.पू. गणाचार्य भगवन् जैस सद्गुरु प्राप्त हो पायेंगे या नहीं क्योंकि विरले ही जीवों को रत्नत्रय स्वरूप देवशास्त्र गुरु की चरण सन्निध्य प्राप्त होती है। ऐसा सोचकर नेहा जी प्रतिदिन भव्या को मंदिर दर्शन कराने तथा पू. गुरुदेव के प्रवचन सुनाने लाती एवं भव्या भी जिनदर्शन एवं प्रवचनों के मानो लालायित ही रहती थी कि मंदिर में आते ही उसका रोना बंद हो जाता तथा पू. गुरुवर का एक-डेढ़ घंटे का स्वाध्याय बड़ी तन्मयता के साथ सुनती थी।

एक दिन जब स्वाध्याय पूरा हुआ तो नेहा जी भव्या को आशीर्वाद दिलाने हेतु पू. गुरुवर के समक्ष गयी और उसकी बीमारी बताते हुए कहा कि गुरुवर डॉक्टर ने जवाब दे दिया है कि अब यह कुछ दिन की ही मेहमान है कृपया अब आप इसे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें जिससे इसे अगले भव में भी जैन कुल प्राप्त हो सके। पू. गुरुवर ने उसे देखा और आशीर्वाद प्रदान करते हुये प्रमोद भाव से बोले क्यों तुम्हें जैन पयार्य अच्छी नहीं लगी क्या? जो इतनी जल्दी जाना है। अरे! ऐसे महान कुल में आई हो तो इतनी जल्दी मत जाना।

अब तो नेहा जी प्रतिदिन स्वाध्याय के उपरांत भव्या को पू. गुरुवर के पास लाती एवं पू. गुरुवर उसे शांतिमंत्र की उच्चारणा के साथ पिच्छी से आशीर्वाद प्रदान करते। कुछ ही दिनों गुरुवर के चमत्कारी, संकटहारी आशीर्वाद का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जब नेहा जी भव्या के प्रोसीजर हेतु अहमदाबाद गई तो रिपोर्ट देखकर डॉक्टर्स भी आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि पहले की अपेक्षा पस न के बराबर ही थी तथा शारीरिक हालत भी बहुत ठीक थी। चूंकि डॉक्टर भी जैनधर्म के प्रति आस्थावान थे जब उन्हें बताया कि यह सब चमत्कार हमारे परमाराध्य प.पू. गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज के आशीर्वाद से ही संभव हो सका है तो वे भी श्रद्धावनत् हो उठे और बोले मुझे भी इस चमत्कारी बाबा के दर्शन करना है।

वहाँ से आकर जब नेहा जी ने सारी बात पू. गुरुवर को बताई और कहा-गुरुवर यह सब तो आपकी ही देन है शायद इस जीव का पुण्य ही था जो मरणासन्न अवस्था में आपकी चरण सन्निध्य एवं आशीर्वाद पाकर पुनर्जीवन इसे प्राप्त हो पाया है गुरुवर आजतक तो आपके चमत्कार सुनते थे किन्तु आज मैंने साक्षात् आपकी महिमा देखी है उस लाईलाज बीमारी से निजात पाकर वर्तमान में भव्या पूर्णरूपेण स्वस्थ्य ही जीवन जी रही है।

प्राणायाम से होने वाले लाभ

श्रमणी आर्यिका पुनीत चैतन्यमति माता जी

- ❖ वात-पित्त-कफ तीनों दोषों को शमन रखना है।
- ❖ पाचन-तंत्र पूर्ण स्वस्थ हो जाता है तथा समस्त उद्र रोग दूर हो जाते हैं।
- ❖ मोटापा मधुमेह-कॉलेस्ट्रोल-कंठज-गैस-अम्लपित्त, श्वासरोग, एलर्जी, माइग्रेन-रक्तचाप-किडनी के रोग, पुरुष और स्त्रियों के समस्त यौन रोग आदि सामान्य रोगों से केन्सर तक सभी साध्य असाध्य रोग दूर होते हैं।
- ❖ रोग- प्रतिरोधक क्षमता अत्यधिक विकसित हो जाती है। वंशानुगत डायविटीज एवं हृदय रोगादि से बचा जा सकता है। बालों का झड़ना और सफेद होना, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ना नेत्र ज्योति के विकास, स्मृति दौर्बल्य आदि से बचा जा सकता है। अर्थात् बुढ़ापा देर से आयेगा आयु बढ़ेगी।
- ❖ मुख पर आभा-तेज ओज एवं शांति आयेगी। मन अत्यंत शांत प्रसन्न-स्थिर तथा उत्साहित होगा डिप्रेशन आदि रोगों से बचेंगे। ध्यान स्वत: लगने लगेगा, घण्टों तक ध्यान करने का सामर्थ्य प्राप्त होगा।
- ❖ स्थूल एवं सूक्ष्म देह के समस्त रोग काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार दोष नष्ट होते हैं।
- ❖ नकारात्मक विचार समाप्त होते हैं।

प्रथम प्रक्रिया- भस्त्रिका प्राणायाम- किसी ध्यानात्मक आसन में सुविधानुसार बैठकर दोनों नासिकाओं से श्वास को पूरा अंदर तक भरना तथा बाहर भी पूरी शक्ति के साथ छोड़ना। 'भस्त्रिका प्राणायाम' कहलाता है।

इस प्राणायाम को अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार तीन प्रकार से किया जा सकता है। मन्दगति से, मध्यम गति से तथा तीव्र गति से। जिनके फेफड़े और हृदय कमजोर हो उनको मंद गति से रेचक तथा पूरण करते हुए यह प्राणायाम करना चाहिए। स्वस्थ व्यक्ति और पुराने अभ्यासी को धीरे-धीरे श्वास प्रश्वास की गति बढ़ाते हुए मध्यम और तीव्र गति से करना चाहिए।

इस प्राणायाम को ५ से १० मिनिट करें भस्त्रिका के समय जिनेन्द्र संकल्प भस्त्रिका में श्वास को अंदर भरते समय मन में शुभ विचार करना चाहिए तीनों लोकों को जानने देखने वाले सिद्ध परमेष्ठी अरहंत परमेष्ठी आचार्य-मुनि परमेष्ठी में विद्यमान दिव्य शक्ति ऊर्जा पवित्रता, शांति और आनंद आदि जो भी शुभ है, वह प्राण के साथ देह में प्रविष्ठ हो रहा है। मैं दिव्य शक्ति से ओत-प्रोत हो रहा हूँ इस प्रकार दिव्य संकल्प के साथ किया हुआ प्राणायाम विशेष लाभप्रद होता है। प्राणायाम की क्रियाओं को करते समय आँखों को बंद रखें और मन में प्रत्येक श्वास निश्वास के साथ 'ओ३म' का मानसिक रूप से चिंतन और मनन करना चाहिए।

लाभ- सर्दी-जुकाम, एलर्जी, श्वासरोग, दमा, पुराना नजला साइनस आदि समस्त कफ रोग दूर होते हैं। फेफड़े सबल बनते हैं तथा हृदय और मस्तिष्क को भी शुद्ध प्राणवायु मिलने पर आरोग्य लाभ होता है थॉयरायड एवं टॉन्सिलादि गले के रोग दूर होते हैं। प्राण मन स्थिर होता है।

रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिए - एक दिन सागर निवासी नीमा नामक सोनी वृन्दावन को गया। वहाँ रात में उसने भुजियों की कढ़ी बनाई। समय वर्षा का था। मेढ़क उछल कर उसमें आ गिरा और भुजियों के साथ वह भी उसमें भुन गया। खाते समय, भुजियाँ समझ कर, ज्यों ही उसने उसको मसका तो चारों पैर उसके हाथ पड़े, उसे अचरज हुआ, दीपक लेकर देखने पर मेंढक मिला। उसका खाना हराम हो गया। तब से उसने रात्रि भोजन को महान् स्वास्थ्य नाशक समझ कर सदा के लिये त्याग दिया। उसके कुटुम्बियों ने भी उसका साथ दिया।

विराग में विमल की मूरत

जगत जी जैन, दिल्ली

विमल गुरु को नितनमू विमल गुणो की खान,
गुरु विराग को करू नमन दे दो मुझको ज्ञान।।

परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ श्री गुरुदेव विरागसागर जी के सामने मैं गुरुदेव विमलसागर जी के विषय में क्या कह सकता हूँ। एक गुरु के विषय में निकट रहने वाले शिष्य जो जानते हैं वह अन्य कोई नहीं जान सकता फिर भी मैं अल्पज्ञ एक अपने सामने घटी घटना आपको सुनाने जा रहा हूँ।

गुरुदेव आचार्य विमलसगार जी महाराज एक दिन मेरे घर की छत पर विराजमान थे मैं और डॉ. असीम गोधा जो मेरे मित्र है वे अजैन थे गुरुदेव के दर्शन करने के लिए आये थे। प्रात: काल ९ बजे की वह पीयूष बेला थी।

गुरुदेव ने अपनी नजर सामने बैठे मेरे मित्र पर डाली और कहा- डॉक्टर साब इधर आओ। सभी देखने लगे यहाँ कौन डॉक्टर है महाराज किसको बुला रहे हैं। महाराज को तो उनका परिचय भी नहीं पता था। मैंने मित्र से कहा- भाई गुरुदेव तुम्हें ही बुला रहे हैं। बोले- अच्छा, मैने कहा- हाँ, वे मुझे साथ लेकर गुरुदेव तक पहुँचे उनका चेहरा कुछ उदास सा था। गुरुदेव ने कहा- तू ने अपना चेहरा क्यों लटका रखा है। वे बोले- कुछ नहीं-२, गुरुदेव ने कहा- क्या बात है मुझे बता। डॉक्टर बोले- महाराज मेरी बहुत बड़ी जमीन है कोई उसे सही दाम में खरीद ही नहीं रहा है। महाराज ने कहा- तुम्हारी जमीन का जो मुख्य दरवाजा है वह गलत दिशा में है उसे बंद करो दूसरा दरवाजा बनाओं। वे डॉक्टर साब जमीन का नक्शा लेकर आये महाराज बताओ दरवाजा कहाँ रखना है। महाराज ने बतला दिया। वे डॉक्टर साहब तुरन्त गये और तत्काल सारा कार्य पूर्ण किया कि इतने में ही एक ग्राहक आ गया उसने अच्छी मात्रा में जमीन का सौदा तय कर दिया। वे डॉक्टर साहब महाराज के पास पहुँचे और खुशी प्रकट करते हुए सारी बाते कहीं साथ ही उसी समय से अजैन होने पर भी वे महाराज के परम भक्त बन गये।

ऐसे थे परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी महाराज। आज उन्हीं के प्रभावक शिष्य परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज को पाकर मैं धन्य हो गया हूँ। आज मुझे लग रहा है कि मेरे गुरु विमलसागर जी महाराज मुझे फिर से मिल गये हैं क्योंकि गणाचार्य विरागसागर जी की मूरत में ही आचार्य विमलसागर जी महाराज की मूरत समाई हुई हैं।

कठिन विषय को भी सरल बना दिया

अनीता जैन, बंगबासी

बड़ा ही सौभाग्य का विषय है कि हमें गोम्मटसार कर्मकाण्ड पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। यद्यपि हमें इसकी ए,बी,सी,डी, भी नहीं आती थी लेकिन हम बंगबासी वालों ने लक्ष्य बनाया था कि जो क्लास आचार्य भगवन् पढ़ायेंगे वही हम पढ़ेंगे इसीलिए हमनेक इतनी कठिन क्लास को पढ़ना प्रारंभ किया।

लेकिन जब हम इस क्लास में बैठे तो परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज ने कर्मकाण्ड जैसे कठिन विषय को इतने अच्छे सरल तरीके से समझाया कि हमें लगा ही नहीं कि गोम्मटसार कर्मकाण्ड कठिन विषय है।

आपने इस क्लास में अनेकोंक ऐसी बातें बताई है जिन्हें हम नहीं जानते थे। यद्यपि हम बंगबासी मंदिर में स्वाध्याय करते है वहाँ हमने ग्रन्थ प्रारंभ में आवश्यक ६ बातों को रट लिया था। लेकिन आपने जो इसका विशद विख्यान किया है उससे हमें एक-एक बात अच्छे से समझ में आ गई। अभी तक तो हम किसी अन्य समाज के कार्यक्रम में जाते थे तो उन्हीं लोगों के साथ खड़े होकर उन्हीं का मंगलाचरण कर देते थे लेकिन आपने बताया कि कहीं भी क्यों न जाओ मंगलाचरण अपना करना चाहिए। अपने आराध्य देव का स्मरण करना चाहिए।

दूसरी बात आपने बताई ज्ञानावरण कर्म मात्र ज्ञान पर आवरण ही डाल सकता है ज्ञानगुण को नष्ट नहीं कर सकता

क्योंकि ज्ञानगुण समाप्त हो जाने पर जीवत्व गुण ही समाप्त हो जायेगा वह अचेतन हो जायेगा।

तीसरी बात आपने बताई कि प्रत्येक जीव प्रतिक्षण समय प्रवद्ध प्रमाण कर्मों का बंध करता है और उतनी ही निर्जरा करता है फिर भी डेढ़ गुणहानि प्रमाण द्रव्य सत्ता में मौजूद रहता है। ये और भी सिद्धान्त के गूढ़ रहस्य जो आपने बताये उन्हें पहले कभी नहीं सुना था। जिन्हें सुनकर हमारा मन प्रसन्नता से भर जाता है ऐसा लगता है इन सभी शब्दमाला को हम अपने अंदर समाहित कर लें। इस क्लास को पढ़कर मैं बड़ी खुश हूँ कि इतने कठिन विषय में मेरा प्रवेश हो गया।

घुँघरु बंध जाते हैं

श्रीमती किरण जैन, डबसन कोलकाता

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का जब से कोलकाता महानगर में मंगल प्रवेश हुआ है तब से ऐसा लगता है मानों प्रात: उठते ही पैरों में घुँघरु बंध जाते हैं कि गुरुवर के पास जाना है क्लास पढ़ना है, प्रवचन सुनना है, आहार देना आदि-आदि।

मैंने भी परम पूज्य गुरुदेव के मुख कमल से कर्मकाण्ड की क्लास पड़ी है अभी तक पूज्य गुरुदेव ने बहुत अच्छी-अच्छी बातें समझाई हैं उनमें हमें बताया कर्म मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं द्रव्यकर्म, भावकर्म इनमें से द्रव्यकर्म की, उत्तरोत्तर भेदों से १४८ प्रकृति हो जाती है उनके नाम परिभाषाएँ भी बताई जिससे हमें यह ज्ञान हो गया है किस कार्य को करने से किस कर्म का बंध होता है और हम उससे कैसे बच सकते हैं। किस प्रकार हम अपने कर्मों की निर्जरा कर उन्हें कम कर सकते हैं। ये सारी बाते पू. गुरुदेव ने हमें बताई निश्चित ही यह क्लास हमारी जीवन शैली को पूर्ण रूपेण बदल देगी।

क्लास से मिली बहुत बड़ी उपलब्धि

श्रीमती नीतू जैन, कोलकाता

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य गुरुदेव द्वारा पढ़ाई जाने वाली सिद्धान्त ग्रंथ गोम्मटसार कर्मकाण्ड की क्लास पढ़ने से मुझे बहुत खुशीहो रही है। दूसरी बात गुरुवर के आने से मुझे सबसे बड़ी उपलब्धि यह हुई कि जिन्होंने कभी किन्हीं महाराजों से क्लास नहीं पढ़ी थी। ऐसे मेरे पतिदेव से जब मैंने कहा- कि बेलगछिया में क्लास पढ़ाई जा रही हैं मैं भी क्लास पढ़ूँगी। तो मेरे पतिदेव ने कहा- मैं भी पढ़ लूँगा। मैंने पूछा कौनसी क्लास पढ़ोगे, बोले- जिसे तुम पढ़ोगी उसे ही मैं पढ़ूँगा और वे भी अनवरत मेरे साथ क्लास पढ़ते हैं सभी धार्मिक कार्यों में सहयोग करने लगे हैं इसकी मुझे सबसे ज्यादा खुशी है।

धुले हुये साफ वस्त्र पहिनना

१. मैले वस्त्र दरिद्रता को प्रदान करते हैं।
२. रोगों को आमंत्रित करते हैं।
३. घृणा को पैदा करते हैं।
४. सम्मान गिराते हैं।
५. अच्छे गुणवान व्यक्ति भी यदि मैले वस्त्र पहिने हैं तो स्वागत सम्मान देने वाले उसके सम्मान में अपमान समझते हैं।
६. अल्प मूल्य वस्त्र भी यदि साफ और स्वच्छ हैं तो भी लोग उसे पास में बिठाते हैं।
७. वस्त्र ही व्यक्ति के व्यक्तित्व के परिचायक होते हैं।
८. आवश्यक नहीं कि वस्त्र को दिन में तीन बार धोये, अरे! उसे तीन दिन में एक बार भी क्यों न धोया जायें, किंतु उन्हें भी गंदगी से बचाने का प्रयास किया जाए तभी तो उनसे तुम्हारी कीमत हो सकेगी।

'संस्कार सुरभि' से साभार

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका- तो फिर ज्ञान आठ और ज्ञानावरण कर्म के पांच भेद क्यों कहें ?

समाधान- मति, श्रुत आदि ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम, मिथ्यादृष्टि व सम्यग्दृष्टि को समान रूप से होने पर भी सम्यग्दृष्टि का ज्ञान मति, श्रुत आदि रूप है और मिथ्यादृष्टि का ज्ञान कुमति, कुश्रुत रूप है। अज्ञान भाव है।

शंका - ऐसे कैसे ?

समाधान- सम्यग्दृष्टि जीव ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से परमार्थ को सिद्ध करता है जब कि मिथ्यादृष्टि संसार की सिद्धि करता है संसार वर्धक कार्यों में ही निरंतर संलग्न रहता है।

शंका- जैसे आप ज्ञान में मिथ्यापना या सम्यक्पना कहते हैं वैसा ज्ञानावरण में भी क्यों नहीं कहते हैं ?

समाधान - जो आगम में है वहीं तो हम कहेंगे, आगम से बाहर का या आगम विरुद्ध तो नहीं कहेंगे।

शंका- क्या वीतराग निर्विकल्प स्वसंवेदन ज्ञान मात्र मुनियों को ही होता है ?

समाधान -हाँ मात्र अभेद निश्चय वीतराग निर्विकल्प समाधि में स्थित मुनियों को ही होता है कहा भी है **(त.अ.गा. १६१)** में

वेद्यत्त्वं वेदकत्वं च यत् स्वस्य स्वेन योगिनः।
तत्स्व संवेदनं प्राहुरात्मनोऽनुभवं दृशम्।।

अर्थ- स्वसंवेदन, आत्मा के उस साक्षात् दर्शन रूप अनुभव का नाम है। जिसमें योगि अपने ही द्वारा अपनी आत्मा का ज्ञेय तथा ज्ञायक भाव को प्राप्त होता है। और भी देखिये **(स.सा.गा. ३८२ क.२२३)**

रागद्वेषविभावमुक्तमहसो नित्यं स्वभावस्पृशः,
पूर्वगामिसमस्तकर्मविकला भिन्नास्तदात्वोदयात्।
दूरारूढ़चरित्रिवैभवबलाच्चञ्चच्चिदर्चिर्मयी,
विंदन्ति स्वरसाभिषिक्त भुवनां ज्ञानस्य संचेतनाम्।।

अर्थ- जिनका तेज राग-द्वेष रूपी विभाव से रहित है, जो सदा स्वभाव को स्पर्श करने वाले हैं, जो भूतकाल के तथा भविष्य काल के समस्त कर्मों से रहित है और जो वर्तमान काल के कर्मोदय से भिन्न है, वे ज्ञानी अति प्रबल चारित्र के वैभव के बल से ज्ञान की संचेतना का अनुभव करते है जो ज्ञान चेतना चमकती हुई चैतन्य ज्योतिमय है और जिसने अपने रस से समस्त लोक को सींचा है। (विशेष देखें २२८ से २४० शंका समाधान में)

शंका - वीतराग स्वसंवेदन ज्ञान के पर्यायवाची नाम कौन कौन से हैं ?

समाधान - भावश्रुतज्ञान, निश्चयश्रुतज्ञान, वीतराग स्वसंवेदन, वीतराग, निर्विकल्प स्वसंवेदन, अभेदरत्नत्रय आत्मग्राहक भावश्रुतज्ञान, निश्चयज्ञान, शुद्धात्माभिमुख, स्वसंवित्ति, आत्मानुभव (त.अ. १६१) चेतना, अनुभूति, उपलब्धि, वेदना **(चेतनानुभूत्युत्युपसलब्धिवेदनानामेकार्थत्त्वात्) (पं.का./ता.वृ.३९/७९)**

शंका- स्वसंवेदन रूप भावश्रुतज्ञान, केवलज्ञान सदृश कैसे है ?

समाधान- स्वसंवेदनज्ञानरूपेण यदात्मग्राहकं भावश्रुतं तत्प्रत्यक्षं यत्पुनर्द्वादशाङ्ग चतुर्दशपूर्व रूप परमागम संज्ञं तच्च मूर्तामूर्तोभय परिच्छित्ति विषये व्याप्ति ज्ञान रूपेण परोक्षमपि केवलज्ञान सदृश मित्यभिप्रायः । (पं.का./ता.वृ./९९/१५९)

अर्थ- स्वसंवेदन ज्ञान रूप से आत्मग्राहक भावश्रुतज्ञान है वह प्रत्यक्ष है और जो बारह अंग, चौदह पूर्व रुप परमागम नाम वाला ज्ञान है वह मूर्त, अमूर्त व उभय रूप अर्थों के जानने के विषय में अनुमान ज्ञान के रूप में परोक्ष होता हुआ भी केवलज्ञान सदृश है।

अध्यात्मिक शंका-समाधान कृति से साभार

हँसी ठिठोले

१. **कंजूस** - कमर में बहुत दर्द है, जरा गुप्ता जी के घर से कोई स्प्रे ले आओ।
पत्नि- बो नहीं देंगे।
कंजूस- हद है कंजूसी की। रहने दो.... अलमारी से अपना ही निकाल लो, दर्द कुछ ज्यादा ही है।

२. **बुजुर्ग महिला** - अपनी आखिरी सांसे गिन रही थी।
डॉक्टर - अम्मा, कोई आखिरी इच्छा हो तो बताओ।
बुजुर्ग महिला - खास तो कुछ नहीं, बस मेरे मरने के बाद श्रद्धांजलि में मेरा बो गोवा वाला फोटो लगाना उसमें पतली और ज्यादा जवान लग रही हूँ मैं।

३. **संता** - ऑपरेशन आँख का है, टांग क्यों काट रहे हो ?
डॉक्टर - यह मेरा पहला ऑपरेशन है मैं नहीं चाहता कि बीच में बोलकर तुम टाँग अड़ाओ।

४. **बेटी** - बेटी ने अपनी माँ को फोन किया, माँ मेरा उनसे झगड़ा हो गया है, मैं ३-४ महीने के लिये घर आ रही हूँ।
माँ बोली - झगड़ा उस कमबख्त ने किया है तो सजा भी उसे ही मिलनी चाहिये। तू रुक मैं ही ५-६ महीने के लिये वहाँ आ जाती हूँ।

कुमारी सोनू जैन, जयपुर

५. **डॉली** - रोज पढ़ती हूँ याद क्यों नहीं होता ?
शॅली- भगवान से प्रार्थना करो।
डॉली- प्रार्थना भी याद नहीं है।

६. **अध्यापक**- तुम फेल हो जाओगे तो क्या करोंगे ?
छात्र- आपको बधाई दूँगा।
अध्यापक - क्यों ?
छात्र - आपके संपर्क में कुछ तो उपलब्धि मिली।

७. **खिलाड़ी** - खेलने से ताकत आती है।
डॉक्टर - सही बात है।
खिलाड़ी - यानि आप भी खेलते हैं।
डॉक्टर - हाँ, पर मरीजों के पैसों से।

कुमारी प्राची जैन, जयपुर

आपको शंकाओं का गुरुमुख से आगमिक समाधान

प्रश्न- चारित्र मोहनीय कर्म कैसे हटे ?

समाधान- चारित्रवान की सेवा चारित्र के प्रति पवित्र भावना चारित्र मोहनीय कर्म को हटाती है। अत: चारित्रवान विशिष्ट चर्यावंत सांधुओं की संगति में रहें ताकि वैसी साधना करने के भाव हमारे अंदर भी जाग्रत हो सकते हैं।

प्रश्न- भव्य-अभव्य की पहचान क्या है कैसे हो सकती है ?

समाधान- रत्नत्रय की अभिलाषा, धर्म को प्राप्त करने की भावना जिनके अंदर होती है वे भव्य हैं इससे विपरीत लोग अभव्य है। .... **मणि जैन, सागर**

प्रश्न- अजैन की लड़की गोद लेकर जैन के लड़के से शादी करें तो वे आहार दे सकते हैं या नहीं ?

समाधान - हमारे यहाँ सगोत्री बच्चे को ही गोद लिया जाता है क्योंकि यदि आप दूसरे बच्चे को गोद लेंगे तो आप उसमें जैन संस्कार तो डाल सकते हैं लेकिन गोत्र नहीं बदल सकते इसलिए वह आहार आदि शुभकार्य भी नहीं कर सकेगी और जैन में शादी कर देने पर पूर्णरूपेण विजाति विवाह कहलायेगा जो की अपराध व निषेध है।

प्रश्न- आपका इतना बड़ा संघ है सभी एक साथ रहते हैं जबकि घर में चार सदस्य एक साथ नहीं पर पाते आप अपना सूत्र हमें भी दे दो ताकि हम लोग भी एक साथ शांति से रहे ?

समाधान -हमने सबसे बड़ा सूत्र अपने संघ को दिया है निभो और निभाओ। कभी हम दूसरों की सुनते हैं हमारे महाराजों ने कहा यहाँ बैठना हैं तो हम वहाँ बैठ जाते हैं यहाँ सोना हैं हम वहाँ सोते हैं वैसे ही जब हम कहते हैं तो हमारे माता जी, महाराज भी हमारी बात मान जाते हैं। दूसरी बात विनयाचार का पाठ भी हम उन्हें पढ़ाते हैं। आपने गुरु माना है तो गुरु की बात भी माननी होगी। इसलिए हमारे संघ के सभी साधुजन इस बात का ध्यान रखते हैं। हर घर के मुखियाँ का भी कर्त्तव्य है वे भी निभे-निभायें दूसरों की सुने ताकि दूसरा हमारी भी सुन सके यही एकता का सूत्र है।

प्रश्न- आपकी प्रेरणा से कोटा आदि जगह विश्वमैत्री स्तंभ बनाये जा रहे हैं उनका क्या रहस्य है ?

समाधान - आज के युग में हर घर में, समाज में, विघटन होता जा रहा है। मैत्री मात्र शब्दों में रह गई है वास्तव में मैत्री खत्म हो चुकी, ऐसे में कीर्तिस्तंभ में लिखे गये मैत्री अहिंसा के सूत्र वहाँ से निकलने वाले हर व्यक्ति पढ़ेगे और उनके मन पर वे सूत्र कुछ न कुछ प्रभाव डालेंगे। उस पर किसी एक धर्म विशेष, समाज विशेष के सूत्र नहीं है सभी धर्म और समाज के सूत्र उस पर लिखें है ताकि जनमानस को वहाँ पहुँचते ही शांति सुख का अनुभव हो और वे उन सूत्रों को जीवन में अपनायें। प्राय: हर जगह के विधायक आदि इस कीर्तिस्तंभ से प्रभावित हैं क्योंकि सभी को उससे लाभ है।

प्रश्न- कुछ टोंको पर काले, सफेद, वासुपूज्य भगवान ५ चरण, नेमीनाथ की टोंक पर ३ चरण हैं ऐसा क्यों ?

समाधान - काले-सफेद चरण क्यों है यह निर्माण कर्ता से पूछने पर ही पता चल सकता है लेकिन वासुपूज्य भगवान के चंपापुर में अर्थात् एक जगह ही पांचों कल्याणक हुए है इसलिए वहाँ पांच चरण है। नेमीनाथ भगवान के तीन कल्याणक शेषावन गिरनार जी से हुए है इसलिए तीन चरण है।

प्रश्न- योग के शुभाशुभ होने पर उपयोग भी शुभाशुभ और उपयोग के शुभाशुभ होने पर योग भी शुभाशुभ होते हैं क्या ?

समाधान - उपयोग जीव का लक्षण है वह संपूर्ण जीवराशी में पाया जाता है उपयोग १२ प्रकार का होता है-

उपओगो दुपियप्पो दंसण-णाणं च दसणं चदुधा।
चक्खु-अचक्खु-ओही दंसणमध केवलं णेयं।।४।।

अर्थ- ज्ञानोपयोग, दर्शनोपयोग। ज्ञानोपयोग के ८ भेद है दर्शनापयोग के ४ भेद है। दोनों को मिलाकर उपयोग के १२ भेद है यह जीवों में पाया जाता है।

दूसरी दृष्टि से जब हम देखते हैं तो अशुभ उपयोग शुभ उपयोग और शुद्धोपयोग, पहले गुणस्थान से ३ तक अशुभ, ४ से ७ तक बढ़ता हुआ शुभोपयोग, ७ से १२ तक शुद्धोपयोग होता है।

१ से ३ अशुभ में भी जीव स्वाध्याय, पूजा माला करता है फिर भी उसका उपयोग अशुभ और योग शुभ है यहाँ कुछ ऐसे भी जीव होते हैं जिनके गलत संस्कार पाप रूप प्रवृत्ति होती हैं तो उनका योग और उपयोग दोनों अशुभ है। इससे आगे ४-६ गुण के जीव ऐसे भी हो सकते हैं जिनके योग अशुभ है आर्त-रोद्ध ध्यान तथा उसी रूप प्रवृत्ति हो सकती है लेकिन सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति से उपयोग शुभ है लेकिन यदि पूजा भक्ति में तल्लीन है तो योग उपयोग दोनों शुभ हैं।

७वे गुण में न योग है न उपयोग न शुभ है न अशुभ वहाँ से शुद्धोपयोग की दशा प्रारंभ होती है ऐसा जानना चाहिए।

प्रश्न- एक समय के बाद १०८ जीव मोक्ष जाते हैं तो संसार से जीव राशी कम नहीं होगी क्या ?

समाधान - एक समय नहीं ध्यान रखिये यूँ तो अनवरत जीव मोक्ष जाते हैं लेकिन यदि अतंराल पड़े तो ८ समय के बाद ६०८ जीव मोक्ष जायेंगे। इनके मोक्ष जाने से त्रसराशी कम नहीं होती क्योंकि उतने ही जीव निगोद से निकल कर त्रस पर्याय में आते हैं इसलिए राशी बराबर हो जाती है। संसार में अनंत जीव राशी है उसका कभी अंत नहीं होगा।

प्रश्न- मुनियों के व्रतो को महाव्रत क्यों कहा जाता है ?

समाधान - पांच पापों से एक देश विरत होना अणुव्रत है और उनका सर्व देश त्याग करना महाव्रत है रत्नकरण्ड में कहा है-

पंचानां पापानां हिंसादीनां मनोवचः कायैः।
कतकारितानु मौदैस्त्यागस्तु महाव्रतं महताम्।।७२।।

पांच पापों का मन, वचन, काय, कृतकारित, अनुमोदना इन तीन का तीन से गुणा करने पर ९ कोटि हो जाती हैं इन नौ कोटि से पापों का त्याग करना महाव्रत हैं। जिन्हें मुनिजन धारण करते हैं।

प्रश्न - मुनिराज एवं आर्यिका सिंहासन पर बैठ सकते हैं क्या ?

समाधान - क्यों नहीं बैठ सकते जब राजा-महाराजा आदि अव्रती लोग बैठ सकते हैं तो वे तो महाव्रती हैं लेकिन बैठना चाहिए कि नहीं, यह महत्वपूर्ण है। ध्यान रखें जिस आसन पर हमारे गुरुदेव बैठते हैं उस सिंहासन पर तो दूर उस पाटे पर भी मैं नहीं बैठता। जब मेरा नावा में धर्मसागर जी महाराज से मिलन हुआ था तो वहाँ छत पर एक पाटा रखा था मैं जाकर उस पर बैठ गया। इतने में एक माता जी आई बोली महाराज इस पाटे से उठो, मैंने कहा- क्यों तो बोली इसपर गुरु महाराज बैठते हैं। धर्मसागर जी बैठते हैं मैं तुरंत उठा और उसे पोछकर रखा। कहने का तात्पर्य है हम गुरु के आसन को सम्मान देते हैं। आज के समय में सिंहासन व्यक्ति के अहंकार की पुष्टि का स्थान बन गया है तो उस पर नहीं बैठकर सदैव गुरु चरणों में बैठना चाहिए।

प.पू. आचार्य धर्मसागर जी का एक उदाहरण है कि हस्तिनापुर में सिंहासन को लेकर कुछ हो गया। वह बात सुन धर्मसागर जी महाराज ने कहा- सिंहासन राग-द्वेष का कारण बन रहा है इसलिए मैं उसका त्याग करता हूँ और उन्होंने त्याग कर दिया था। आज जो सिंहासन पर बैठने लगा तो कल वह सोचेगा गुरु के बगल में मेरा भी सिंहासन लगे जो की अनुचित है। तुम लघुता तो रखो गुरुजन तुम्हें बाहर के सिंहासन पर नहीं हृदय सिंहासन पर बैठालेंगे। सच्चे शिष्य के लिए गुरु चरणों से बड़ा कोई सिंहासन नहीं होता।

प्रश्न- बाजार की पिच्छयों में सूत का धागा लगा रहता है जो अंदर तक गीला नहीं हो पाता तो वहाँ सोला रहा क्या ?

समाधान- यदि रेडीमेड़ बाजार की बनी पिच्छियों में सूत का धागा है तो वहाँ सोला नहीं रह पायेगा अत: या तो उन पिच्छियों को लाकर धागा बदलो अन्यथा उसे न लो क्योंकि उसे आप कितनी भी दूर रखो फिर भी श्रावक छुयेगा अथवा आहार के बाद देगा जिससे चौका अशुद्ध हो जायेगा।

प्रश्न- आप लगभग १३ प्रांत मुं विहार कर चुके है सभी प्रांतों के साधु आपके संघ में है लेकिन सबसे अधिक साधु मध्य प्रदेश के क्यों है ?

समाधान- सबसे अधिक चातुर्मास हमारे मध्यप्रदेश में हुए है इसलिए सबसे अधिक साधु मध्यप्रदेश के है। दूसरी बात यह है मध्यप्रदेश धर्म की उपजाऊ भूमि है जहाँ से निरन्तर रत्न निकलते रहते हैं।

न्योमोनिया (PNEUMONIA)

संकलन- श्रमणी आर्यिका विवक्षाश्री माताजी

कारण- फेफड़े में प्रदाह हो जाने को न्यूमोनिया कहते है। शुरु में ठण्डक लग जाने से फेफडे में सूजन हो जाती है और सांस लेने में तकलीफ होती है। दूसरी अवस्था में बलगम बन जाता है और सारे फेफड़े में फैल जाता है। दोनों फेफड़ों में सूजन हो जाये तो डबल न्यूमोनिया कहलाता है। रोग भयंकर हो तो फेफड़े साफ न होकर फेफड़ों में बलगम बढ़ जाता है। हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं और रोगी की मृत्यु हो जाती है।

लक्षण- तेज ज्वर बढ़ता है। पसलियों में पीड़ा होती है। सिर दर्द, पैरों में दर्द, छाती में हल्का सा दर्द, बेचैनी, प्यास अधिक लगना, जीभ सूखी और काली सी हो जाती है, श्वास लेने में कष्ट होता है। खांसी हो जाती है आदि लक्षण प्रगट होती है।

उपचार-

- ❖ न्यूमोनिया होने पर २ रत्ती हींग एक मुनक्का में भर कर रोगी को कुछ दिन खिलाते रहें। न्यूमोनिया ठीक हो जायेगा।
- ❖ बच्चों को न्यूमोनिया, श्वास आदि स्थिति में थोड़ी सी हींग पानी में घोलकर पीलाएँ। इससे कफ पतला होकर निकल जाता है। दुर्गन्ध और कीटाणु नष्ट हो जाते है।
- ❖ २० तुलसी के हरे पत्ते और ५ काली मिर्च पीसकर पानी में मिलाकर पिलाने से न्यूमोनिया में लाभ होता है।
- ❖ न्यूमोनिया हो जाने पर तारपीन के तेल में कपूर मिलाकर रोगी की छाती पर मलने से शीघ्र आराम मिलता है।
- ❖ इस रोग में रोगी को हवा से बचाना चाहिए तथा गर्म स्थान में रखना चाहिए।
- ❖ सरसों के तेल में थोड़ा अफीम डालकर मालिश करने से निमानिया वाले को फायदा होता है।
- ❖ पसली में अरण्डी के पत्ते तेल लगाकर गर्म करके बान्धना चाहिए तथा नमक की पोटली का सेक करना चाहिए।
- ❖ काली मिर्च नग ५ और मुनक्का १ तोला लेकर १ पाव पानी में औटावें, छटांक रहने पर गर्म-गर्म दिन में २-३ बार पिलाने, कफ पतला होकर निकल जायेगा।
- ❖ १ रत्ती अकरकरा घोटकर पीने से कफ निकल जाता है।
- ❖ गवार पाठा की १ फाक को खड़ी चीरकर उसमें १ गांठ हल्दी को महीन पीसकर भरदें, गीले कपड़े में लपेट, हल्दी पक जाय तब गिरी निकाल शक्कर मिला गोलिया बना लें। गोलियों के सेवन से निमोनिया में फायदा है।
- ❖ अभ्रक भस्म और लोह भस्म १-१ रत्ती, पीपल और बंसलोचन २-२ माशा करके ६ रत्ती में चासनी में दोनों टाइम चाटने से हृदय में भी फायदा होता है।
- ❖ सोंफ, मुनक्का और लिसोडा का क्वाथ बनाकर देने से कफ पतला होकर निकलता है।
- ❖ बंसलोचन, छोटी इलायची, मुलेठी, मुनक्का गिलोय के सत् को चासनी में चाटने से कफ निकल जाता है।
- ❖ पसली के दर्द पर सेक- गुड़ के सिरके में बालू रेत को मिलाकर कपड़े में बांध पोटली बनाकर गर्म करके सेक करने से फायदा होता है।
- ❖ ज्वर में ज्यादा प्यास हो तो- बड़ी इलायची को भूनकर थोड़े-थोड़े दाने खिलावें।
- ❖ यदि ज्वर में मलावरोध हो तो- कुटकी, हरड़, अमलतास, निसोत और आवला का क्वाथ पिलावें।
- ❖ यदि ज्वर में अतिसार हो तो- सोंठ, अतीस, चिरायता, कूड़ा की छाल इनको जौ कूट करके क्वाथ बनाकर देवें।

विरागामृत

(२३.८.२०१९ वेलगछिया)

१. जो पापों से भयभीत है वही गुणों को धारण करने का आकांक्षी होगा।
२. जो पापों से भयभीत नहीं होता वह गुणों का अभिलाषी नहीं हो सकता है।
३. संसार में गुणों की ही पूजा होती है, उन्हीं का आदर सम्मान होता है।
४. गुणों को प्राप्त करने का हमेशा प्रयास करते रहना चाहिए।
५. गुणों को प्राप्त करने में वर्षों वर्ष लग जाते हैं पर एक दोष में इतनी बड़ी ताकत होती है कि वह सारें गुणों को एक क्षण में नष्ट कर देते हैं।
६. बुराईयाँ यों ही नहीं जाती उन्हें नष्ट करने में बड़ी मेहनत करनी पड़ती है।
७. अपने अन्दर की बुराई को मिटाने के लिये तपस्या करनी पड़ती है।
८. अपनी कमी को दूर करने का उपाय खोजने वाला ही व्यक्ति सफल होता है।
९. ऐसे सावद्य वचन नहीं कहने चाहिये, जिनसे सम्मान गिरे।
१०. साधु वचन अच्छे मर्यादित वचन होना चाहिए, अपने से बड़े हो या कनिष्ठ ही क्यों न हो सभी से हितमित प्रिय वचन बोलना चाहिये।
११. कर्मों के क्षय करने के लिये बुराईयों को दूर करना आवश्यक है।

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमशः शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान-

१. भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली पिन को. ११०००३
सं.सूत्र श्री संजय दुवे मो. ८५०६८६२९५४ फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा हैं

पं. वृजेन्द्र कुमार जैन,(वीरू) देवेन्द्रनगर

तुम गुण मंडित पाप विहंडित जैनागम के पंडित हो,
हे जगदाता मेरो अक्षाता तिहूँ जग में तुम वंदित हो।
कहीं न ठौर मिली इस जग में सबने मुझे नकारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

अविरल चढूँ श्रृंखला गुण की धार हृदय में यह उद्देश्य,
ऐसापद पा जाऊँ कि फिर कुछ भी रहे न पाना शेष।
मेरा वह गुणस्थान न छूटें जिसको संयम से धारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

यह दुर्गंधित देह सजावे इत्र फुलेल लगाया है,
तीव्रराग के वशीभूत हो इसको खूब सजाया है।
तुमने रत्नत्रय भूषण से जीवन को श्रृंगारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

यह मन पुलकित हो जाता जब गुरुवर हाथ रखे अपना,
बदल गई है दिशा और पूरन होता हर सपना।
जनम जनम मैं ऋणी रहूँगा लाखो उपकार तुम्हारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

घर परिवार ये रिश्ते नाते सबकी अपनी आशा है,
या प्रसन्न या हो आक्रंदित इनका यही तमाशा है।
जग में भ्रमण कराने वाले पिता, पुत्र और दारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

दुनियाँ आज दीवानी तेरी सारे जग में छाई उमंग,
उसी भाव से अर्चन करता जितने हैं भक्ति के रंग।
इन भक्तों को भक्ति सिखाने गुरु ने सब कुछ वारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

मंगलमय गुरु मंगल करते हरे अमंगल दु:ख संताप,
पाप देखकर डर जाता है क्षण भंगुर होता अपने आप।
तुमने विश्व हितैषी मग को हृदय में अंगीकारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

हे गुरु यह उत्कंठ भावना हम बच्चों का रखना ध्यान,
गिरने से अब हमें बचाना मेरी उगली लेना थाम।
राह बताओ भटक गया हूँ यहाँ चार गलियारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

अक्टूबर माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
जन्म दिवस	१.१०.१९६३	भिण्ड, श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी मुनिराज
दीक्षा दिवस	१.१०.२०१७	बारसोई, आर्यिका सुनन्दनश्री माताजी, आर्यिका सुवन्दनश्री माताजी, क्षुल्लिका सुचन्दश्री माताजी।
दीक्षा दिवस	१.१०.२०१७	ग्वालियर, श्रमण श्री विनन्दसागर जी, आर्यिका विश्रयश्री माताजी, आर्यिका विमुदश्री माताजी, ऐलक विनुतसागर जी, क्षुल्लक विश्वकुन्द सागर जी, क्षुल्लिका विश्रांतिश्री माताजी।
पुण्य तिथि	४.१०.२०१२	जयपुर, श्रमण श्री विश्वभूतेश सागर जी, श्रमण श्री विश्वेशर सागर जी
जन्म दिवस	५.१०.१९७८	सागर, श्रमणी आ. विप्राश्री माता जी
जन्म दिवस	५.१०.१९४५	परतापुर, श्रमण श्री विश्वलोकेश सागर जी मुनिराज
दीक्षा दिवस	६.१०.२०१७	इन्दौर, श्रमण श्री साध्यसागर जी, श्रमण श्री सदभाव सागर जी, श्रमण श्री सौम्य सागर जी, श्रमण श्री संकल्प सागर जी, श्रमण श्री साक्ष्य सागर जी, श्रमण श्री संजयंतसागर जी, श्रमण श्री सारस्वत सागर जी, श्रमण श्री संयत सागर जी।
समाधि दिवस	७.१०.२०१७	कविनगर, श्रमण श्री विश्वविज्ञ सागर जी
समाधि दिवस	८.१०.२०१७	सिरड़शाहपुर, श्रमण श्री अनसन सागर जी
जन्म दिवस	१०.१०.१९८३	समसावाद, श्रमण श्री विकसंत सागर जी
क्षुल्लक दीक्षा दिवस	११.१०.१९८९	भिण्ड, श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी
ऐलक दीक्षा दिवस	१३.१०.२०००	सम्मेद शिखर, मुनि श्री विशोक सागर जी
दीक्षा दिवस	१४.१०.२००९	अशोक नगर, श्रमण श्री सुप्रभ सागर जी, श्रमण श्री सुब्रतसागर जी, श्रमण श्री सुयशसागर जी।
जन्म दिवस	१७.१०.१९७७	ललितपुर, श्रमणी आर्यिका विवक्षाश्री माताजी
जन्म दिवस	२३.१०.१९७६	किशनपुरा, श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी मुनिराज
पुण्यतिथि	२४.१०.२०१७	कविनगर, श्रमणश्री विश्वबंध सागर जी मुनिराज
जन्म दिवस	२५.१०.१९४८	टीकमगढ़, श्रमण श्री मनोज्ञसागर जी

आश्विन मास के व्रत एवं कल्याणक महोत्सव

१५ सितम्बर २०१९	आश्विन कृष्ण १	क्षमावाणी पर्व, षोडश कारण व्रत समाप्त
१६ सितम्बर २०१९	आश्विन कृष्ण २	नेमीनाथ जी गर्भ कल्याणक
२१ सितम्बर २०१९	आश्विन कृष्ण ७	रोहणी व्रत
२२ सितम्बर २०१९	आश्विन कृष्ण ८	अष्टमीव्रत
२७ सितम्बर २०१९	आश्विन कृष्ण १४	चतुदर्शी व्रत
२९ सितम्बर २०१९	आश्विन शुक्ल १	श्री नेमीनाथ जी ज्ञान कल्याणक
६ अक्टूबर २०१९	आश्विन शुक्ल ८	श्री शीतलनाथ जी मोक्ष कल्याण एवं अष्टमी व्रत
१२ अक्टूबर २०१९	आश्विन शुक्ल १४	चतुर्दशी व्रत

समाचार

गुरु से बढ़कर दुनियाँ में कोई नहीं-श्रमण मुनि विशेषसागर जी

मुलावा (महा.) श्री १००८ आदिनाथ व पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मुलावा के ५०० वर्ष के इतिहास में होने वाले प्रथम बार चातुर्मास व गुरु पूर्णिमा के निमित्त दिनांक १६.७.२०१९ को प्रात: ६.०० बजे से ही श्रद्धालुओं का आना प्रारंभ हो गया था। सम्पूर्ण ग्राम में दिवाली सा माहौल दिख रहा था।

इस अवसर पर प्रात: काल ६.०० बजे अभिषेक व गणाचार्य श्री विरागसागर विधान सम्पन्न हुआ। शांतिधारा करने का सौभाग्य अतुल जैन व पंचामृताभिषेक संजय आलोने को प्राप्त हुआ। दोपहर १२.१५ बजे से विशाल शोभायात्रा मंदिर जी से प्रारंभ हुई। शोभायात्रा में ग्राम वासियों सहित पुसद, रिसोड, नांदेड, अनसिंग, उमरखेड, हदगाव, सावदा, तामसा आदि स्थानों से भक्त गण पधार कर चार चांद लगाये।

इस अवसर पर पू. मुनिश्री ने कहा जिसके जीवन में गुरु नहीं उसका जीवन शुरु नहीं, गुरु से बढ़कर दुनियाँ में कोई नहीं, गुरु ही भगवान का परिचय कराते हैं। सम्पूर्ण ग्राम वासियों के पुण्योदय होने पर दिगम्बर संतों का चातुर्मास होता है। चातुर्मास का दूसरा नाम वर्षायोग है। इन चार माह में साधु विशेष साधना आराधना करते हैं। और श्रावक उनकी भक्ति अर्चना कर पुण्यार्जन करते हैं। श्रावको को भी चातुर्मास में यथा शक्ति त्याग करना चाहिए।

पू. मुनिश्री के प्रवचन पूर्व गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी गुरुदेव के चित्र अनावरण व द्वीप प्रज्जवलन किया गया। मंगलाचरण कु. भाग्यश्री रिसोड व धीरज जैन जामनेर ने किया है। इस अवसर पर विजय कुमार डुब्बेवार मुलावा जिला पंचायत सदस्य चितंगराव कदम, सेजकुमार झांझरी औढ़ा आदि श्रद्धालुगण पू. मुनिश्री के चरणों में श्रीफल अर्पण कर आशीष ग्रहण किये। चातुर्मास स्थापना निमित्त ५ बड़े कलश व ५१ छोटे कलश स्थापित किये गये क्रमश सौ मीनाक्षी, अनंत कुमार निवद्या, सौ वंदना मोतीलाल जी रिसोड, श्री रमेश फंदी मुलावा, श्री सोनरक्के, रूकमनूरी, महावीर जी पुसद को कलश स्थापना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम पंडित शांतिलाल जी अकोला इनके निरक्षण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम पश्चात वात्सल्य भोजन रखा गया।

विजय जैन, अतिशय क्षेत्र मुलावा

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज की सुशिष्या
समाधिस्थ श्रमणी आर्यिका विनिग्रहश्री माताजी का जीवन परिचय

पूर्व नाम	-	श्रीमती गुलाब बाई जैन
स्थान	-	नोगाँव, जिला- छतरपुर
पिता-माता	-	श्री हल्कु लाल जी जैन, श्रीमती उजयारी देवी जैन
जन्म स्थान	-	नेमवार, दमोह
पति	-	श्रीमान धर्मचन्द्र जैन (समाधिस्थ-मुनिश्री विग्रह सागर जी महाराज)
परिवार	-	(२ भाई, ३ बहिन) ३ पुत्र, २ पुत्री। पुत्र- स्व.श्रीमान महेन्द्र कुमार जैन-श्रीमती ममता जैन, श्री जयकुमार-श्रीमती अर्चना जैन, श्री कमल कुमार जैन-श्रीमती लीलम जैन पुत्री - श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन-स्व.श्री शांत कुमार जैन, श्रीमती सुशीला जैन- श्रीमान शिखर चन्द्र जैन
उम्र	-	९३ वर्ष
प्रतिमा	-	१९७० में शिखर जी, ७ प्रतिमा
क्षुल्लिका दीक्षा	-	७.२.२०१४ कारीटोरन- उत्तरप्रदेश, जिला- ललितपुर

दीक्षा के साथ ही १२ वर्ष का सल्लेखना व्रत ग्रहण किया।

नाम	–	क्षुल्लिका विनिग्रह श्री माताजी
दीक्ष गुरु	–	प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज
आर्यिका दीक्षा	–	८.८.१९ दोपहर ११.३० पर ६१ पिच्छियों के सान्निध्य में उपवास पूर्वक।
दीक्षा गुरु	–	प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
समाधि	–	९.८.१९ प्रातः ३.३५ पर
निर्यापकाचार्य	–	प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
उपस्थित संघ महाराज ससंघ	–	६१ पिच्छी सान्निध्य आ. सुबलसागर जी महाराज, मुनि सुपार्श्वसागर जी
चातुर्मास	–	पथरिया, शाहगढ़, भिण्ड, गाजियाबाद, शिखर जी, बेलगछिया, कोलकाता
विशेष	–	मुनिश्री विग्रहसागर जी के वचनानुसार दीक्षा ग्रहण की।

गृहस्थावस्था में भी अनेक संघों में चौके लगाये, सोलह कारण, दसलक्षण, पंचमेरु व्रत किये दीक्षा के बाद भी रोहिणी व्रत, अष्टमी चतुर्दशी को उपवास, रसी का नियम था कुछ दिन पूर्व १५ दिन से घी का त्याग, ८ दिन से मीठा, दूध का भी त्याग किया था।

श्रमणी आर्यिका विनिग्रहश्री माता जी का समाधिमरण महोत्सव

जीवन के बाद मृत्यु एक शाश्वत सत्य है किन्तु वह उन्हीं की सार्थक होती है जो जीवन में किये गये व्रत-नियम-संयम के धर्म रूपी शिखर पर गुरु प्रवास से समाधि सल्लेखना महोत्सव का कलशारोहण कर पाते हैं।

पूज्य श्रमणी आर्यिका विनिग्रहश्री माता जी ऐसी ही उच्चकोटि की साधिका थी जिन्होंने जन-जन की आस्था के केन्द्र, श्रमण संस्कृति के श्रेष्ठ संत परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज के चरणाश्रय तले अपने जीवन को सार्थक और सफल किया।

माताजी का ग्रहस्थिक नाम श्रीमती गुलाब बाई जी था जन्म स्थान नेमवार दमोह, पति श्रीमान धर्मचंद्र जी जैन नोगाँव। आपका ३ पुत्र २ पुत्रियों का हरा-भरा परिवार था।

आपके पति अत्यंत धार्मिक होने से अनेक साधु संघों के चातुर्मास में चौका लगाते थे आप भी छाया की तरह उनका अनुकरण करती थी। व्रत उपवासों में भी आप सदा अग्रणीय रहती थी। अतः गृहस्थावस्था में ही आपने सोलह कारण, दशलक्षण, पंचमेरु आदि अनेक व्रत किये तथा ७ प्रतिमा ली थी।

सन् १९९७ में आपने पति सहित द्रोणगिर जी सिद्धक्षेत्र पर परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के दर्शन किये, दर्शन करते ही धर्मचन्द्र जी ने कहा- जिनकी मुझे तलास थी वो मिल गये। उन्होंने गुरुचरणों में समाधि मरण करने की भावना रखी तथा विधिवत् १९९८ भिण्ड चातुर्मास में गुरु चरणों में उनकी मुनिदीक्षा पूर्वक समाधि मरण क्रिया पूर्ण हुई। समाधि के पूर्व उन्होंने आपसे भी कहा था कि इन गुरु के चरणों को छोड़ना नहीं, तुम्हें भी अंत समय इन्हीं गुरुदेव के चरणों में समाधि पूर्वक मरण करना है।

उनके वचनों का स्मरण रखते हुए आपने मोही परिवार को समझा बुझाकर सन् २०१४ अतिशय क्षेत्र कारीटोरन के पंचकल्याणक में दीक्षा कल्याणक के अवसर पर पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के कर कमलों से क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण की। उसी वक्त १२ वर्ष का सल्लेखना व्रत भी ग्रहण किया।

दीक्षा के बाद आपके व्रत-उपवास की दृढ़ता और बढ़ गई प्रत्येक अष्टमी चतुर्दशी को उपवस एवं रोहिणी आदि अनेक व्रत आपने किये नित्य रसी का नियम था उसके बाद भी १५ दिन तक घी का, ८ दिन मीठा, दूध का त्याग किया करती थी। लगभग एक वर्ष से आपका स्वास्थ्य अत्यधिक गिरता जा रहा था जिसे देख निर्यापकाचार्य का कुशल दायित्व संभालने वाले पूज्य गणाचार्य भगवन् ने श्रावण शुक्ल पंचमी (नाग पंचमी) को आपकी संस्थरा रोहण क्रिया विधिवत् की

इस दिन भी आपने स्वेच्छा से उपवस ग्रहण किया था। पूज्य आचार्य भगवन् समय-समय पर आपको मार्मिक संबोधन देते तथा पाठ सुनाते, सारा संघ भी यथायोग्य आपकी सेवा में तत्पर था संघस्थ माताजी यथाक्रम से आपके पास रात्रि जागरण तथा पाठ सुनाते हुए सजग रखती थीं।

मोक्ष सप्तमी को आपने पेय छोड़कर तीन प्रकार के आहार का त्याग किया। पूज्य गुरुवर श्री ने समस्त संघ के साथ आपके निकट ही प्रतिक्रमण किया तथा सुख-शांति हेु शांतिमंत्र पढ़कर आशीर्वाद दिया। अष्टमी ८/८ को पुन: स्वेच्छा से आपने उपवास ग्रहण किया तथा पूज्य आचार्य भगवन् ने आपकी अत्यंत क्षीण स्थिति देखते हुए, श्रमणाचार्य सुबलसागर जी महाराज, श्रमण मुनि सुपार्श्वसागर जी महाराज आदि ६१ पिच्छियों की उपस्थिति में आपकी प्रार्थना अनुसार स्त्री पर्याय का सर्वोत्कृष्ट पद आर्यिका दीक्षा प्रदान की तथा यम सल्लेखना ग्रहण कराई। आपने प्रसन्न मन के साथ सभी से क्षमा याचना की। शाम को पुन: आचार्य भगवन् ने आपको संबोधन के साथ-साथ धार्मिक पाठ सुनाये तथा सभी माताजिओं को अत्यंत सजग रहने की बात कहीं रात्रि में माता जी यथाक्रम से आपकी सेवा में तत्पर थी तभी ३.०० बजे आपने स्वयं पूज्य गुरुदेव एवं बड़ी माता जी को बुलाने का संकेत दिया। सूचना पाते ही पूज्य गणाचार्य भगवन् तत्क्षण आपके पास आये और चारों प्रकार के आहार का त्याग करा संबोधन दिया उसी क्षण माता जी ने गुरुदेव के चरणों में अपनी नजर इस प्रकार टिका दी मानो कहना चाहती हो कि- हे भगवन् इस भव में तो आपने हमारा उद्धार कर दिया। अब आगे भी जब तक मोक्ष न हो तब तक मुझे शरण देना। प्रात: ३.३५ पर संपूर्ण संघ की उपस्थिति में पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से ऊँ नम: सिद्धेभ्य: मंत्र का श्रवण करते हुए उन्होंने अपनी अंतिम श्वास ली।

प्रात: ८.३० बजे बड़ी ही धूम-धाम से उनकी अंतेष्ठी की अंतिम शोभा यात्रा निकाली गई उनके अंतिम संस्कार यथा स्थान पर सम्पन्न किये गये। रविवार को उनकी श्रद्धाञ्जलि सभा आयोजित की गई।

क्षेत्र परिचय

महाराष्ट्र प्रांत में यवतमाल जिल्हा अंतर्गत उमरखेड तहसील से केलव १९ कि.मी की दूरी पर मुलावा ग्राम की पावन भूमिपर श्री १००८ आदिनाथ व श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान का ५०० वर्ष प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है। इस मंदिर में आदिनाथ, चंद्रप्रभु, सुवार्श्वनाथ, चैतन्य चमत्कारी पार्श्वनाथ और बहुत सारी तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान है। बहुत की सुन्दर रंगीन कांच काम से गाभारा सुशोभित है। मंदिर जिके साथ यहां पर भव्य धर्मशाला है, साथ में त्यागी भवन का काम प्रगति पथपर है। यहाँ का समाज कुशल, समृद्ध, समाधानी होने से और श्रमण मुनिश्री १०८ विशेष सागर जी के आशीर्वाद और मार्ग दर्शन से सभी काम प्रगति पथ पर है।

भट्टारक श्री विशाल किर्ती महाराज के मार्गदर्शन से यहाँ प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व, अष्टानिका पर्व सानंद मनाया जाता था, कई बार उनका चातुर्मास यहाँ पर होता था। आसपास के श्रावक गण सम्मिलित हो कर पुण्यार्जन प्राप्त करते थे। आज भी कर रहे हैं।

१५० साल पुराणी घटना है जयपुर का एक शिल्पी पार्श्वनाथ की एक सुंदर मूर्ति, लेकर आया था। तेज पुंज, मनोज्ञ, सुहास्यवहनी १०८ फणायुक्त, शाम वर्ण मूर्ति देखकर सभी श्रावण गण हर्षाएँ। यह मूर्ति मुलावा मंदिर में प्रतिष्ठापित करने के भाव उनके मन में जागे। लेकिन शिल्पी ने मना कर दिया क्योंकि वो यह मूर्ति कारंजा (लाड) ले जा रहा था। उस दिन उसका मुलावा मुक्काम हुआ। मंदिर जी का दर्शन किया और सबेरे मूर्ति का गाडा ले के कारंजा निकल पडा। जैसे ही वो नगर का प्रवेश द्वार जिसे (वेष) कहते है आया तो उसके गाडी के बैल वही पर रूक गये। बाहर जा ही नहीं रहे, उसने कोशिष कि तो गाड़े का पहिया ही टूंट पडा। मूर्ति भी निचे गीर गयी और मूर्ति के हाथ कि एक उंगली टूट गयी। वो आज भी दिखती है। शायद श्रावकों कि भक्ति और सद्भावना से प्रेरित होकर श्री जी भी मुलावा के बाहर नहीं जाना चाहते थे।

यहाँ के श्रावकों ने उसें बिनती की यह मूर्ति हमे दे दीजिये हम मंदिर जी में विराजमान करेंगे। कारंजा नगरी सेठ सावकारों की वहा पर कीमत अच्छी मिलेगी। ऐसा उसने सोचा था, लेकिन मूर्ति बाहर नहीं जा रही थी, यह एक चमत्कार

था। यहां के श्रावकों ने उसे सही कीमत दे के मूर्ति ले ली।

मुलावा वासी श्रावक श्रविका बड़े धूमधाम से मूर्ति मंदिर जी में ले आये। शके १७९३ तथा विरसंवत २३९८ अश्विन शुक्ल पूनम यांनी शरद पूनम के दिन शुभ मुहूर्त बेलापर, भट्टारक श्री विशाल कीर्तिजी के मार्गदर्शन में विधी पूर्वक पंच कल्याणक महोत्सव मनाकर श्री जी की प्राण प्रतिष्ठा वेदीपर की।

भक्तवत्सल चैतन्य चमत्कारी पारस बाबा भक्तों की मनोकामना पूरी करने मुलावा ग्राम में बस गये। तब से आज तक इस क्षेत्र पर प्रतिवर्ष शरद पूर्णिमा के वक्त तीन दिन का मेला और पूनम के दिन रथोत्सव बड़े धमुधाम से मनाया जाता है। आसपास के सभी भक्त गण जैन अजैन शामिल होते हैं। इस परम्परा को १४८ साल हो गये हैं। आज भी सुबह, दोपहर और शाम प्रभु के चेहरे के भाव अलग से दिखते हैं। ऐसी पावन भूमि पर सर्वथा १०८ श्री कुशाग्र नंदीजी, श्री आर्यनंदीजी, श्री कार्तिकेय नंदीजी, श्री कनक सागर जी, श्री समाधी सागर जी महाराजी का समागम प्राप्त हुआ। उनका अमुल्य मार्गदर्शन मिला है।

१७ नौव्हेंबर २०१६ में मुलावा समाज का भाग्य खिल उठा। प.पू गणाचार्य १०८ श्री विरागसागर जी के परमशिष्य परमपूज्य श्रमण मुनिश्री १०८ श्री विशेषसागर, मुनिश्री श्रावको के आग्रह पर ससंघ पारस प्रभु के दर्शन हेतु आये थे। जैसे ही प्रवेश किया और पारस प्रभु को देखा तो बहोत प्रसन्न हो गये और बोल उठे मैं यहा पर अगर नहीं आता तो भूल कर बैठता।

प्राचीन मंदिर का जिर्णोद्धार धीमी गती से चल रहा था। महाराज श्री ने दूसरे दिन विश्वस्थ जनों की बैठक ली। मार्गदर्शन किया एक दिशा दी सबको काम पर लगाया। मंदिरजी में मानस स्तंभ की आवश्यकता है, यह भावना व्यक्त करते ही, चमत्कार देखो मान स्तंभ दातार सौ. मिनीक्षी अनंतकुमार जैन सामने कर जोड़े खडी हुई।

१५ दिनों में तैयारी करके दि. २ डिसेंबर २०१६ के दिन श्री १०८ श्रमण मुनिश्री विशेषसागर जी के सान्निध्य में शिलान्यास समारोह, बड़ी धुमधाम से संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रवचन में महाराज श्री ने श्रावक गणो को उपदेश किया और यह पवित्र भुमी ५०० साल पुराणा मंदिर, चैतन्य चमत्कारी पारस प्रभु विराजमान होने से यह तिर्थ अतिशय क्षेत्र है ऐसा जाहीर किया। धन्य है यतीवर मुनिश्वर जिन्हें स्वानुभव से भगवान का साक्षात्कार मिला। मुनिश्री के मार्गदर्शन पर ट्रस्टी लोगों ने क्षेत्रपर मान स्तम्भ का और कांच का काम १०, ११ महिनों में पुरा किया। प.पू. मुनिश्री १०८ विशेषसागर जी महाराज के सान्निध्य में और पंडित पवन जी शास्त्री मुरैना के मार्गदर्शन में दिनांक ६ से ८ दिसम्बर २०१७ तीन दिवसीय प्रतिस्थापना महोत्सव मनाया गया। इस महोत्सव में मुनिश्री के भक्तगण दूर-दूर से पधारे थे। इसी बेला में गणाचार्य विराग सागर जी श्रमण निलय का शिलाण्यास संपन्न हुआ। और वह काम अभी प्रगति पथ पर है।

प.पू. मुनिश्री १०८ विशेष महाराज कि कृपा से प.पू. वात्सल्य दिवाकर निमित्त ज्ञानी आ.श्री १०८ विमलसागर जी कि प्रतिमा क्षेत्र पर प्राप्त हुई है, जिनकी प्रति स्थापना जल्द ही मुनिश्री के सान्निध्य में होगी।

इस क्षेत्र पर आज तक किसी दिगम्बर त्यागियों का वर्षायोग का अवसर नहीं मिला, समस्त नगर वासियों के तीव्र पुण्योदय से प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ श्री विशेष सागर जी गुरुदेव का २३ वां विशेष चातुर्मास कराने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। प.पू. मुनिश्री की चर्या साधना व वास्तल्य से जैन क्या जैनेतर भी बहोत प्रभावित है। सभी को मुनिश्री कां मंगल अशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। आप सभी को निवेदन है कि आप भी इस वर्षायोग में पधारकर क्षेत्र दर्शन, गुरु दर्शन का लाभ ले के पुण्यार्जन करे, और हमें अतिथि सत्कार का अवसर प्रदान करें।

श्री १००८ आदिनाथ व पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन
अतिशयक्षेत्र मुलावा, तह.उमरखेड,
जि.-यवतमाल

भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण महोत्सव मनाया

७ अगस्त २०१९ श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन उपवन मंदिर बेलगछिया में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज, पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज, पू. मुनि श्री सुपार्श्वनाथ जी महाराज ससंघ की ६१ पिच्छिओं के पावन सानिन्ध्य में २३वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान का निर्वाण महोत्सव निर्वाण लाडू-चढ़ाकर मनाया गया। प्रात: भगवान की पार्श्वनाथ की अभिषेक शान्तिधारा पूर्वक अष्ट द्रव्य से प्रजन की गई तत्पश्चात् प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज, पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज का क्रमश: श्री मनोज जी कासलीवाल मधु छावडा, श्री मक्खनलाल जी पाण्डया, श्री दिलीप जी बगड़ा द्वारा पाद प्रक्षालन कर शास्त्र भेंट किये गये। पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज के उद्बोधन के पश्चात् प.पू. गणाचार्य श्री ने अपने अमृतमयी प्रवचन में वर्तमान में सर्वाधिक पूजे जाने वाले श्री भगवान पार्श्वनाथ जैसी समता धारण करके तथा कमठ के जैसे बैर का त्याग कर एक अच्छे इन्सान बनने की प्रेरणा दी। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा मंत्रोच्चार के साथ श्री मनोज कुमार जी कासलीवाल को भगवान पार्श्वनाथ को २३ किलो निर्वाण लाडू चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर आयोजित लाडू सजाओ प्रतियोगिता ने अनेक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वात्सल्य पर्व मनाया गया

१५ अगस्त २०१९ को बेलगछिया कलकत्ता में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज, पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज एवं पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ ६१पिच्छी के पावन सान्निध्य में भगवान श्री श्रेयांसनाथ जी की अभिषेक पूजन के साथ निर्वाण लाडू श्री अशोक जी सेठी श्री महावीर जी गंगवाल एवं श्री सुमेरमल जी चूडीवाल द्वारा चढ़ाया गया तथा श्री अकम्पनाचार्य आदि ७०० मुनियों को अर्घ समर्पण कर श्री विष्णुकुमार मुनि की अष्टद्रव्य से पूजन सम्पन्न हुई। इस अवसर पर प.पू. गणाचार्य श्री का श्री गजराज जी कासलीवाल, पू.आ. सुबलसागर जी का श्री अशोक जी सेठी, पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी का श्री दीपक जी पाटनी श्री रोहित जी गंगवाल द्वारा पाद प्रक्षालन किया गया। श्री महेन्द्र जी पाटनी, श्री श्रवण कुमार, कमाल कुमार जी एवं श्री दीपक जी पाटनी रोहित जी गंगवाल द्वारा शास्त्र भेंट किये। श्री मुनि संघ व्यवस्था समिति द्वारा १०८ फुट की राखी प.पू. गणाचार्य श्री को भेंट की गई। पू. मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी महाराज, पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज एवं प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने अपने प्रवचनों के माध्यम से ७०० मुनियों सहित अकम्पनाचार्य के साथ उज्जैयनी नगरी के घटना क्रम तत्पश्चात हस्तिनापुर में राजा पदम् से वाली आदि मंत्रीओं द्वारा राज्य प्राप्तकर अकम्पनाचार्य सहित ७०० मुनियों पर उपसर्ग एवं श्री सागर सेन मुनिराज द्वारा श्रवण नक्षण के कम्पायमान देख मुनियों ऊपर हो रहे उपसर्ग को दूर करने हेतु विष्णुकुमार मुनि को संदेश भेजना एवं विष्णुकुमार मुनि द्वारा उपसर्ग दूर कर मुनियों की रक्षा करने का व्याख्यान किया गया। तथा संकल्प कराया कि कोई भी मुनिराज, आर्यिका माताजी, ऐलक, क्षुल्लक-क्षुल्लिका त्यागी व्रती किसी भी संघ के हों हम उन सभी की रक्षा के लिये आगे आयेंगे रक्षा करेंगे।

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने राष्ट्र के संदेश में भारत देश के सुखी शांत एवं सामृद्धि शाली देखने की कामना की।

१८ अगस्त २०१९ पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज का ५२वाँ अवतरण दिवस मनाया गया।

साधु संतों व साध्वियों को मिलेगा पुलिस प्रोटक्शन

अल्प संख्यक आयोग के चेयरमेन हाजी अराफत शेख के विशेष प्रवास से जैन समाज के साधु-संतों व साध्वियों के विहार में पुलिस प्रोटेक्शन देने का प्रस्ताव पास हुआ हैं। गत ६० साल से कांग्रेस सरकार ने इस प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान नहीं की थी, परन्तु मोदी सरकार में अल्पसंख्यक आयोग के विशेष सहयोग द्वारा यह प्रस्ताव पास किया गया। इस प्रस्ताव को पास करवाने हेतु सम्पूर्ण जैन समाज माननीय मुख्यमंत्री श्रीमान देवेन्द्र फडणवीसजी, श्रीमान विनोद तावडेजी एवं श्रीमान

हाजी अराफत शेख साहबजी के द्वारा किये गये अथक प्रयास की अनुमोदना करता हैं। इसी के साथ हमारे पूज्यनीय साधु-संतों तथा साध्वीजी से नम्र निवेदन हैं कि आप अपने विहार के कार्यक्रम की जानकारी स्थित जैन संघ के ट्रस्ट मंडल के ट्रस्टीयों अथवा वहाँ के मण्डलों को दें। संघ के सभी माननीय ट्रस्टीयों व मंडल के सभी स्वयं सेवकों से भी निवेदन हैं कि हमारे संतों द्वारा दी गई विहार की जानकारी नजदीक के पोलिस चौकी में संघ के लेटर हेड पर या मंडल के लेटर पेड पर लिखित में अधिकारिक रूप में दें ताकि अल्प संख्यक जैन समाज को सरकार द्वारा दी गई सभी सुविधाओं का फायदा हो सके। हमारे इस छोटे से प्रयास के कारण आये दिन हमारे साधु-संतों के एक्सीडेंट की घटनाओं से उनके जान माल की रक्षा हो सकेगी, व साध्विजीयों पर होने वाले अमानवीय अत्याचारों से भी उनकी रक्षा हो सकेगी।

जैनमित्र साप्तासिक, स्थापना १९००, १८ जुलाई २०१९

उपवास रखने से सेहत को भी मिलते हैं गजब के लाभ

आपको शायद पता न हो लेकिन उपवास आपके शरीर के साथ-साथ मानसिक स्वस्थ्य के लिए भी अच्छा होता है। उपवास के बाद, ब्लड में एंडोर्फिन का स्तर काफी बढ़ जाता है। यह आपको एक बेहतर मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करता है। उपवास का प्रभाव व्यायाम की भांति ही होता है।

उपवास रखना वैसे तो एक आस्था का प्रश्न है। अलग-अलग धर्मों के लोग अपनी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार उपवास या व्रत रखते हैं और ईश्वर की अराधना करते हैं। वहीं अगर इसे साइंटिफिक नजरिए से देखें तो ऐसा करने से उनकी सेहत को भी काफी लाभ होता है। जी हाँ, उपवास रखना सेहत के लिए बेहद ही लाभकारी होता है। तो चलिए जानते हैं इसके बारे में-

बॉडी डिटॉक्सीफिकेशन- आमतौर पर लोग दिनभर उल्टासीधा खाते हैं, लेकिन जब आप व्रत रखते हैं तो आपके शरीर द्वारा कोई भोजन नहीं खाया जाता है। ऐसे में शरीर में मौजूद फैट ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है। इतना ही नहीं, एक दिन भोजन स्किप करने और केवल जल या लिक्विड पीने से शरीर के सभी विषैले तत्व बाहर निकलते हैं।

बेहतर मानसिक स्वास्थ्य- आपको शायद पता न हो लेकिन उपवस आपके शरीर के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा होता है। उपवास के बाद, ब्लड में एंडोर्फिन का स्तर काफी बढ़ जाता है। यह आपको एक बेहतर मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करता है। उपवास का प्रभाव व्यायाम की भांति ही होता है।

कम करें वजन- अगर आप सप्ताह में एक या दो बार उपवस रखते हैं तो इससे आपको भीतर ही भीतर काफी लाइट फील होता है। इतना ही नहीं, इससे वजन कम करने में भी सहायता मिलती है। उपवास के दौरान आपका शरीर फैट को एनर्जी में तब्दील करता है, जिससे धीरे-धीरे आपका वजन कम होने लगता है। इसके अतिरिक्त इससे आपका मेटाबॉलिज्म भी बूस्टअप होता है बस आप इस बात का ध्यान रखें कि अन्य दिन भी आप संतुलित आहार ही लें। वैसे उपवास के कारण समय के साथ-साथ खानपान की आदतों में भी सुधार आता है और फिर व्यक्ति ओवरईटिंग भी नहीं करता। इस तरह उपवास रखने की आदत से आप अपना वजन आसानी से कम कर सकते हैं।

हेल्दी इंटस्टाइन- अगर आप अपनी आंतों को स्वस्थ रखना चाहते है तो उपवास अवश्य रखें। उम्र के साथ-साथ व्यकित के इंटस्टाइल स्टेम सेल्स की कार्य क्षमता में गिरावट आती है, लेकिन उपवास के दौरान, कोशिकाएँ ग्लूकोज के बजाय फैटी एसिड को तोड़ देती है और इससे कोशिकाओं को रिजनरेटिव बनने में मदद मिलती है।

बेहतर हीलिंग प्रोसेस- उपवास करने का एक सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे शरीर में हीलिंग प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है। दरअसल, जब भोजन पेट में मौजूद नहीं होता है, तो शरीर पाचन के बजाय अन्य महत्वपूर्ण कार्यों जैसे चवापचय गतिविधि और प्रतिरक्षा प्रणाली पर ध्यान केंद्रित करता है।

कई रिसर्च में भी इस बात की पुष्टि हुई है। यहाँ तक कि एयलीटों को प्रशिक्षण के दिनों में उपवास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि अतिरिक्त वसा को बहाया जा सके और मांसपेशियों की वृद्धि को अनुकूलित किया जा सके।

३० जुलाई २०१९, मंगलवार कोलकाता

बाबर के वंशज बोले- हम रखेंगे राम मंदिर की ईंट

हैदराबाद, १८ अगस्त मुगल साम्राज्य के अंतिम शासक बहादुर शाह जफर के वंशज याकूब हबीबुद्दीन तुसी ने अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण की इच्छा जताई है। तुसी ने कहा है कि अगर अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण होता है तो हमारा परिवार उसकी पहली ईंट रखेगा और हम मंदिर की नींव के लिए सोने की शिला दान करेंगे। हाल ही में तुसी ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर अन्हें अयोध्या राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद केस का पक्षकार बनाने की भी मांग की थी। हालांकि तुसी की इस याचिका को कोर्ट ने अबतक स्वीकार नहीं किया। एक इंटरव्यू में तुसी ने कहा कि जिस जमीन को लेकर विवाद छिड़ा हुआ है, उसके मालिकाना हक के कागज किसी और के पास नहीं है ऐसे में मुझे यह अधिकार है कि मैं मुगल वंश का वंशज होने की हैसियत से अदालत में अपनी बात कर सकूँ। तुसी ने कहा कि मैं इस मामले में अपना विचार रखना चाहता हूँ कि विवादित जमीन का मालिकाना हक किसे मिले और मेरी मांग है कि एक बार ही सही मुझे सुना जाना चाहिए। तुसी ने कहा कि १५२९ में प्रथम मुगल शासक बाबर ने अपने सैनिकों को नमाज पढ़ने की जगह देने के लिए बाबरी मस्जिद का निर्माण कराया था। यह स्थान सिर्फ सैनिकों के लिए था और किसी के लिए नहीं। मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता कि मस्जिद से पहले यहाँ क्या था, लेकिन अगर हिंदू उस स्थान को भगवान राम का जन्मस्थान मानकर उसमें आस्था रखते हैं तो एक सच्चे मुस्लिम की तरह मैं उनकी भावना का सम्मान करूँगा। इस सवाल पर कि क्या उनके पास जमीन के मालिकाना हक से जुड़े कोई दस्तावेज हैं, तुसी ने कहा कि उनके पास भले ही कोई कागज ना हो, लेकिन मुगल वंश के उत्तराधिकारी की हैसियत से वह इस जमीन के मालिकाना हक के अधिकारी कहे जा सकते हैं।

टाइगर कुत्ते ने मेरी माँ को बचाया

कोलकाता, १८ अगस्त टाइगर ने एक शेर को मार कर भगा दिया। यह घटना दार्जिलिंग में घटी। उसने शेर से टक्रा कर एक महिला की जान बचाई है। अरुणा लाम्बा सोनाडा में स्थित नया गांव के अपने घर में बैठी हुई थी। तभी मुर्गियों ने शोर मचाना शुरु किया। वह अपनी बेटी के साथ यह देखने गयी कि मुर्गियां क्यों शोर मचा रही है। दोनों उस गोदाम की ओर गयी, जहाँ मुर्गियां रखी हुई थी। उन लोगों ने सोचा कि नेवला घुस आया है। इस लिए मुर्गियां छटपटा रही है। अरुणा की बेटी स्मृति ने यह बात कहीं। वैसे जैसे ही अरुणा और उसकी बेटी गोदाम पहुँची वहाँ उन लोगों ने गोदाम में दो चमकती हुई आँखें देखी। उन लोगों को यह बात समझ में आ गयी कि शेर भीतर है। समय नष्ट किए बगैर उन लोगों ने गोदाम का दरवाजा बंद कर दिया, लेकिन इससे पहले शेर ने छपहा मार कर अरुणा को घायल कर दिया। दूसरी ओर उनका पाल्तू कुत्ता टाइगर ने अपनी मालकिन को बचाने के लिए मैदान में कूद गया और शेर से लड़ना शुरु कर दिया। यह लड़ाई कुछ मिनटों तक चली और इस कुत्ते ने शेर को भगा दिया। स्मृति का कहना है कि टाइगर के कारण मेरी माँ बच गयी। अरुणा को पहले प्राइमरी हेल्थ सेंटर भेजा गया। बाद में उन्हें दार्जिलिंग जिला अस्पताल में भेज दिया गया। उन्हें २० टांके पड़े हैं। अभी उनके स्थिति ठीक है। इधर वन विभाग के अधिकारी गांव में आकर शेर को पकड़ने के लिए जाल बिछाया है। कई दिनों से यह अफवाह फैली हुई थी कि गाँव में शेर को देखा गया है।

दैनिक विश्वमित्र से साभार- १९ अगस्त २०१९, सोमवार कोलकाता

मोरपंख के सहारे नवग्रह दशाओं से मुक्ति

प्राचीन काल से ही नजर उतारने व प्रभु प्रतिमा के आगे वातावरण को पवित्र करने के लिए मोर पंख का प्रयोग होता आया है, इसका उपयोग वशीकरण, कार्यसिद्धि, भूत-प्रेत बाधा, रोग मुक्ति, ग्रह बाधा, वास्तुदोष निग्रह आदि में अहम माना गया है, इसे शिरोधार्य करने से विद्या लाभ मिलता है, देवी सरस्वती के उपासक व विद्यार्थी पुस्तकों के मध्य अभिमंत्रित मोर पंख रख लाभ उठा सकते हैं, मंत्र सिद्धि के लिए जपनेवाली माला को मोर पंखों के बीच रखा जाता है, घर में अलग-अलग स्थान पर मोर पंख रखने से घर का वास्तु बदल सकते हैं, नव ग्रहों की दशा से बचने में भी मोर पंख कारगर है, कक्ष में मोर

पंख वातावरण को सकारात्मक बनाने में लाभदायक है, ग्रहों को शांत करने में मोर पंख कैसे सहायक होते है, आइये जानें-

सूर्य की दशा- रविवार को नौ मोर पंच लेकर आयें, पंख के नीचे रक्तवर्ण मैरुन रंग का धागा बांध लें, एक थाली में पंखों के साथ नौ सुपारियाँ रखें, गंगाजल छिड़कते हुए २१ बार ऊँ सूर्याय नमः जाग्रय स्थापय स्वाहाः मंत्र पढ़ें दो नारियल सूर्यदेव को अर्पित करें, लड्डूओं का प्रसाद पढ़ाएँ।

चंद्रमा की दशा- सोमवार को आठ मोर पंख लायें, पंख के नीचे सफेद धागा बांध लें, एक थाली में पंखों के साथ आठ सुपारियाँ रखें, गंगाजल छिड़कते हुए २१ बार ऊँ सोमाय नमः जाग्रय स्थापय स्वाहाः मंत्र पढ़े, पांच पान के पत्ते चंद्रमा को अर्पित करें, बर्फी का प्रसाद चढ़ाएँ।

मंगल की दशा- मंगलवार को सात मोर पंख लेकर आये, पंख के नीचे लाल रंग का धागा बांध लें, एक थाली में पंखों के साथ सात सुपारियाँ रखें गंगाजल छिड़कते हुए २१ बार ऊँ भू पुत्राय नमः जाग्रय स्थापय स्वाहाः मंत्र पढ़े, दो पीपल के पत्तों पर अक्षर रख कर मंगल ग्रह को अर्पित करें, बूंदी का प्रसाद चढ़ाएँ।

बुध की दशा- बुधवार को छह मोरपंख लायें पंख के नीचे हरा धागा बांधे, एक थाली में पंखों संग छह सुपारियाँ रखें, गंगाजल छिड़कते हुए २१ बार ऊँ बुधाय नमः जाग्रय स्थापय स्वाहाः मंत्र पढ़े। जामुन या बेरिया बुध ग्रह को चढ़ायें केला पत्ते पर मीठी रोटी का प्रसाद चढ़ायें।

गुरु की दशा- बीरवार को पांच मोर पंख लायें, पंख के नीचे पीला धागा बांधें, एक थाली में पंखों संग पांच सुपारियाँ रखें, गंगाजल छिड़कते हुए २१ बार ऊँ वृहस्पतये नमः जाग्रय स्थापय स्वाहाः मंत्र पढ़े, ११ केले वृहस्पति देव को चढ़ाएँ बेसन का प्रसाद बनाकर चढ़ाएँ।

शुक्र की दशा- शुक्रवार को चार मोरपंख लायें पंख के नीचे गुलाबी धागा बांधे, एक थाली में पंखों संग चार सुपारियाँ रखें, गंगाजल छिड़कते हुए २१ बार ऊँ शुक्राय नमः जाग्रय स्थापय स्वाहाः मंत्र पढ़े, तीन मीठे पान शुक्रदेव को चढ़ाएँ गुड़ चने का प्रसाद बनाकर चढ़ायें।

शनि की दशा- शनिवार को तीन मोर पंख लायें, पंख के नीचे काला धागा बांधें, एक थाली में पंखों के साथ तीन सुपारियाँ रखें, गंगाजल छिड़कते हुए २१ बार ऊँ शनैश्वराय नमः जाग्रयह स्थापय स्वाहाः मंत्र पढ़ें, तीन मिट्टी के दीये तेल सहित शनिदेव को अर्पित करें, गुलाब जामुन या कोई मीठा प्रसाद बनाकर चढ़ाएँ।

राहु की दशा- शनिवार को सूर्योदय से पूर्व दो मोर पंख लायें, पंख के नीचे भूरा धागा बांध लें, एक थाली में पंखों संग दो सुपारियाँ रखें, गंगाजल छिड़कते हुए २१ बार ऊँ राहवे नमः जाग्रय स्थापय स्वाहाः मंत्र पढ़े, चौमुखी दीया जला कर राहु को चढ़ाएँ मीठा प्रसाद बनाकर चढ़ाएं।

केतु की दशा- शनिवार को सूर्यास्त होने पर एक मोरपंख लायें, उसके नीचे स्लेटी रंग का धागा बांधे, एक थाली में पंख संग एक सुपारी रखें, गंगाजल छिड़कते हुए २१ बार ऊँ केतवे नमः जाग्रय स्थापय स्वाहाः मंत्र पढ़े, दो कलश पानी भर कर और फलों का प्रसाद चढ़ाएं।

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.com**
2. **Facebook : viragvani**
3. **Email : viragsagarji@gmail.com**
4. **youtube : Ganacharya Viragsagarji**
5. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

विराग वर्ग पहेली 45

उदाहरण - र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे-विराग

मे	रे	स	प	नो	नी	में	आ
ये	वा	ण	त्स	श्व	ल्य	दि	खा
रे	व	ती	अ	ये	न	का	हो
श्र	जी	स्वा	औ	ल्गु	र	ति	खा
हा	थ	सि	फा	र	त्रा	कृ	प
र	ष्य	रा	ज	चि	पु	गु	रो
रू	त्त	पू	व	र	मे	रा	हि
उ	ना	चे	गा	यें	भ	र	णी

विराग वर्ग पहेली 44 के उत्तर

(1) श्रेणिक चरित्र
(2) आदिपुराण
(3) प्रद्युम्न चरित्र
(4) वैराग चरित्र
(5) सम्यक्त्व कौमूदी
(6) श्रीपाल चरित्र
(7) पद्म पुराण
(8) पार्श्व पुराण
(9) उत्तर पुराण
(10) मेरुमंदर पुराण

नोट- (1) आपको इसमें १० नक्षत्र के नाम खोजने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ [ ] डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....